

# दादावाणी



तेरा किया  
या चंदू का  
किया?

उसने मेरा  
अपमान  
किया।

उसने मुझे  
'वेअकल'  
कहा।



समझ जाला  
कि वह रो  
पहले से ही  
जहीं थी।



तेरे ही कर्म  
का उदय  
आया।

उसने मुझे  
गाली दी।

उसने मेरे  
अहंकार को  
तेस पट्टियाई।



बहुत फायदा  
हुआ, बड़े  
मुकदमाने की  
असपाई हो गई।



कोई व्यक्ति आपका कुछ अपमान करता है, वह आपके कर्म का उदय हो, तब वह निमित्त के रूप में मिलता है। आपके कर्म का उदय आपको भुगतना है, उसमें उसका क्या दोष है बेचारे का ?

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : ९, अंक : ५

अखंड क्रमांक : १०१

मार्च २०१४

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,  
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

e-mail :

dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

Printed & Published by  
Dimple Mehta on behalf of  
Mahavideh Foundation  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Owned by  
Mahavideh Foundation  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Printed at  
Amba Offset  
Basement, Parshvanath  
Chambers, Nr.RBI,  
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at  
Mahavideh Foundation  
Simandhar City, Adalaj -  
382421. Dist-Gandhinagar.

Total 28 pages including cover

सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यु.एस.ए. : १५० डॉलर

यु.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यु.एस.ए. : १५ डॉलर

यु.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम  
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## अपमान के सामने ज्ञान का पुरुषार्थ

### संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) का अक्रम विज्ञान क्या कहता है कि मनुष्य जीवन में उदय में आनेवाले व्यवहार पहले के कॉजेंज का परिणाम हैं और वह लेन-देन के हिसाब अनुसार हैं। पूरा जगत् हिसाब के अनुसार है। हिसाब के बिना कोई व्यक्ति किसी का बाल भी बांका नहीं कर सकता।

अब ये उदय में आनेवाले कड़वे या मीठे व्यवहार राग-द्वेष या मान-अपमान के संयोगों में परिणमित होता है। मान सभी को प्रिय है, लेकिन मोक्षमार्ग के प्रवासी के लिए वह अत्यंत जोखिमभरा है। मान में बरतनेवाली मिठास मोक्ष मार्ग की प्रगति को रूंधती है और संसार में और ज्यादा दूबा दे ऐसी है।

हमेशा ऐसा नहीं होता कि जीवन में सिर्फ मान के ही अवसर आएँ। क्योंकि जगत् के संबंध प्रतिक्रियावाले हैं। इसलिए मान में से लिए हुए सुख अपमान से चुकाने पड़ते हैं। और जब जीवन में अपमान के अवसर आएँ, तब क्या करना चाहिए? अज्ञानता में तो अपमान के भोगवटे में कितने ही निकाचित कर्म बाँध देते हैं, लेकिन मोक्षमार्ग में तो वह पुसाता ही नहीं न? अब शुद्धात्मा पद प्राप्त होने के बाद खुद का अपमान तो होता ही नहीं है न? अपमान होता है फाइल नं-१ (चंदूभाई) का और वे उसके पूर्व के हिसाब अभी चुकते हैं, उसमें हमें क्या लेना-देना? हमें तो चंदूभाई से कहना है कि ‘भाई अपमान करनेवाले का उपकार मानना और उनके लिए भाव बिना भाव बिगाड़े जमा कर लेना।’ जो हमें कर्म से मुक्त करवाने आया है, उसका तिरस्कार तो नहीं करना चाहिए न? जितना मान का प्रेमी होता है, उतना अपमान का प्रेमी बनेगा, तभी जगत् से छूट पाएगा। इसीलिए दादाश्री ज्ञान जागृति का उपाय बताते हुए कहते हैं कि ‘ऐसे समय में हमें जागृत रहना चाहिए और दूसरों के अहंकार को ठेस लगाकर नुकसान का धंधा नहीं करना चाहिए।’

जब कोई अहंकार को ठेस पहुँचाए (फाइल नं-१ को), तब उसे उपकारी मानना चाहिए कि ओहोहो! आज तो बहुत बड़े नुकसान की भरपाई हो गई और बहुत नफा हो गया।

दादाश्री कहते हैं कि यह पूरा जगत् आपको कर्म से मुक्ति दिलवाना चाहता है, इसलिए जागृत रहना और फाइल का समभाव से निकाल करना। समभाव से निकाल कैसे करना है? तब कहते हैं, हमें मानना है कि यह मेरा हिसाब चुक रहा है, संयोग व्यवस्थित के आधीन है और सामनेवाली व्यक्ति निर्दोष है। हमें तो होम में रहकर फॉरिन का (संयोगों का) निकाल करना है। होम में रहें अर्थात् खुद शुद्धात्मा में रहे तो प्रज्ञा अपने आप निकाल कर लेगी। यह तो पहले जो भूलें की हुई हैं उनका निकाल नहीं किया है इसलिए भूलें वापस आती हैं। अब आप जागृत हो गए इसलिए भूल को स्वीकार करके निकाल कर देना। तब फिर जितनी भूलें खत्म होंगी, उतने आप मोक्षमार्ग में आगे बढ़ते जाओगे।

अब आत्मा प्राप्त होने के बाद अंदर जो समकित बल है, वह रात-दिन निरंतर कार्य करता रहता है, प्रज्ञा चेतवनी देती रहती है। उस समय जागृतिपूर्वक लाभ उठाना चाहिए। अपमान के अवसर पर प्रतिपक्षी भाव नहीं होने दे, तो वह संयम कहलाता है और संयम से आत्म शक्ति बढ़ती है। जैसे-जैसे आत्म शक्ति बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे अनुभव के अंश भी बढ़ते जाते हैं।

प्रस्तुत संकलन में ऐसे अपमान के अवसरों में निश्चय में रहकर, व्यवहार का किस तरह ज्ञान के पुरुषार्थ से निकाल करें, उसकी अद्भुत समझ संकलित हुई है। जिसका अभ्यास आत्म जागृति से आगे, शुद्ध उपयोगपूर्वक ज्ञान का पुरुषार्थ और पराक्रम भाव तक पहुँचने के लिए सभी महात्माओं के लिए उपकारी रहेगा।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

अपमान के सामने ज्ञान का पुरुषार्थ

कड़वे-मीठे के स्पर्श, हिसाब के अनुसार

**प्रश्नकर्ता :** दादा, कोई कड़वे शब्द कहे तो वे सहन नहीं होते, तो क्या करना चाहिए मुझे?

**दादाश्री :** देख इसका तुझे खुलासा करूँ। इस रास्ते के बीच काँटा पड़ा हो, और हज़ारों लोग निकलें लेकिन काँटा किसी को भी नहीं चुभता, लेकिन जब चंदूभाई जाएँ तो काँटा टेढ़ा हो, फिर भी ऐसा चुभता है कि पँजे में से आरपार निकल जाता है! कड़वे का स्पर्श होना, वह हिसाबवाला होता है। और कड़वे का स्पर्श होता है, तब मानना चाहिए कि अपने कड़वे की रकम में से एक कम हुई। जितना कड़वा सहन करोगे, उतने आपके कड़वे कम होंगे। मीठा भी जब स्पर्श होता है, तब उतना कम होता है।

अपने को किसी ज्योतिषी ने हाथ देखकर कहा हो कि चार घात हैं, तो चार घातों में आपको सावधान रहना चाहिए। अब उसमें से एक घात गई तो आनंद मनाओ कि *सिलक* (जमापूँजी) में से एक कम हुई! वैसे ही अपमान, गालियाँ ऐसा सब अपने पास आए तो आनंद मानना कि *सिलक* में से एक दुःख कम हुआ।

सभी कुछ हिसाबवाला है, *सिलक* के साथ में है, कोई गप्प नहीं है। मरने तक का सभी कुछ हिसाब सहित है। यह तो हिसाब के अनुसार होता है कि इनकी तरफ से ३०१ आएँगे, उसके पास से २५ आएँगे, इसके पास से १० आएँगे।

किसी के साथ हज़ार गालियों का हिसाब हो तो वह एक गाली दे तो हमें ऐसा कहना चाहिए कि

हज़ार में से एक तो कम हुई! अब नौ सौ निन्यानवे गालियाँ बाकी रहीं!

लेकिन यह कड़वा स्पर्श होता है तब अच्छा नहीं लगता। यह कम स्पर्श होता है, फिर भी कड़वा क्यों अच्छा नहीं लगता?

सामनेवाला कड़वा दे तब वह कौन से बहीखाते का है, वैसे नहीं जान लें तब तक वह अच्छा नहीं लगता। लेकिन यदि पता चले कि, ‘अहो! यह तो इस खाते का है!’ तब फिर वह अच्छा लगेगा। यह तो जब तक वह रकम *सिलक* में हो, तभी तक देने आते हैं।

उससे कहें कि कड़वा फिर से दे न, तो भी वह नहीं देगा। ऐसी तो किसी के हाथ में सत्ता है ही नहीं। यह तो सारा रिलेटिव रिलेशन (व्यवहारिक संबंध) है। कड़वा-मीठा सबकुछ हिसाब से मिलता है। रोज़ कड़वा देनेवाला एक दिन ऐसा सुंदर दे देता है! ये सारे ऋणानुबंधी ग्राहक-व्यापारी के संबंध हैं।

इफेक्ट, वह है कॉज़ेज़ का फल

**प्रश्नकर्ता :** और यदि हमने कभी गाली दी ही नहीं हो तो?

**दादाश्री :** यदि गालियाँ नहीं दी हों तो सामने गाली नहीं मिलेगी। लेकिन यह तो आगे-पीछे का हिसाब है, इसलिए दिए बगैर रहेगा ही नहीं। बहीखाते में जमा रहेगा, तभी आएगा। किसी भी तरह का इफेक्ट आया, वह हिसाब के बगैर नहीं हो सकता। इफेक्ट, वह कॉज़ेज़ का फल है। इफेक्ट का हिसाब, वही व्यवहार है।

**प्रश्नकर्ता :** यानी वे दो ही गालियाँ आई, तो क्या वे हिसाब के अनुसार आईं?

**दादाश्री :** हिसाब के बगैर कोई चीज़ आपके घर नहीं आती। वह इफेक्ट है, विसर्जन है, इसलिए हिसाब के अनुसार आई है। तब कहता है, 'बहीखाते क्या मैंने बिना देखे लिखे हैं?' अरे, हिसाब के बगैर नहीं आता। इसलिए तू जमा कर ले न, अभी से। 'अच्छा साहब, जमा कर लूँगा।' कहता है। और अगर पाँच का उधार देना हो तो दे, तुझे यदि पसंद हो तो। व्यापार अच्छा लगता हो तो उधार देना।

### पिछला कर्ज़ चुक रहा है आज

कोई व्यक्ति आपको जो कुछ भी देता है, वह आपका ही दिया (कर्ज) हुआ वापस देता है। आपके दिए बगैर तो कोई मनुष्य आपके यहाँ जमा करवाने आएगा ही नहीं! जितना आपने दिया होगा उतना ही वापस आता है, लेकिन कब दिया था उसकी आपको खबर नहीं है। आप आज के बहीखाते देखते हो कि इसमें तो कहीं दिया हुआ नहीं लगता, इसलिए आपको ऐसा लगता है कि यह कुछ नया देने आया है। वास्तव में तो नया कभी भी कोई देने आता ही नहीं। यह सारा पिछला कर्ज़ ही है, वह आपको तुरंत जमा कर लेना है। अब यदि आप फिर से वापस दोगे तो व्यापार चलता रहेगा।

पिछले जन्म में किसी को दो गालियाँ दी होंगी तो इस जन्म में कोई आपको दो गालियाँ देगा। उस घड़ी आपको फिर वापस कड़वा लगता है इसलिए आप वापस पाँच गालियाँ देते हो। दो गालियाँ वापस आईं, तो कड़वा लग रहा है, तो फिर जब पाँच गालियाँ वापस आएँगी तब क्या दशा होगी? इसलिए आप नया उधार देना बंद कर दो। जिस व्यापार में नुकसान हुआ और दुःख होता है, उस व्यापार में पैसे लगाने (उधार देना) बंद कर दो। हमें कोई दो सुना जाए, तब हमें भीतर अंदर से शांतिपूर्वक उसे जमा कर लेना चाहिए, क्योंकि जो दिया हुआ है वही वापस आया है। इसलिए अभी

जमा कर लो और फिर वापस मत देना। अतः इस दुनिया में जो कुछ भी मिलता है वह, जो दिया था वही वापस आ रहा है, ऐसा समझ में आए तो पहली हल हो जाएगी या नहीं होगी? यानी हमें किसी भी तरह से इस पहली को हल करना है।

**प्रश्नकर्ता :** ये कर्म खपाना इसी को कहते हैं?

**दादाश्री :** यही है, कि कड़वी भेंट आएँ तब स्वीकार कर लेनी चाहिए। लेकिन ऐसी कड़वी भेंट-सौगातें आएँ तब कहता है कि 'अरे! तू मेरे साथ ऐसा क्यों कर रहा है?' ऐसा करने से कर्म नहीं खपते, नया व्यापार शुरू होता है। जिसे स्वरूप का भान है यानी कि जिसे इस दुकान का निकाल करना है वह हल ला देता है। जिसे स्वरूप का भान नहीं है उसका तो व्यापार चल ही रहा है, दुकान चल रही है।

### उधार दिया है, उतना जमा कर लो

कोई हमें गाली दे तो वह इसलिए कि खाते में कुछ बाकी होगा, तो उसे जमा कर लेना। अब फिर से कौन व्यापार शुरू करे? जमा कर लेंगे तो व्यापार बंद होता जाएगा। और उसके बाद फिर अच्छा माल आएगा।

हमारे पास भी कड़वे प्याले आए थे न। हमने पी लिए और खत्म भी हो गए! जो कुछ किसीने कड़वा दिया था, वह हमने बल्कि आशीर्वाद देकर पी लिया! इसीलिए तो हम महादेव जी बन गए हैं! 'दादा' की तो रकम ही खत्म हो गई है, तब फिर कड़वा कौन दे?

हम पंद्रह बरस से उधार देते नहीं है, इसलिए हिसाब साफ हो गए हैं सभी! उधार देना ही बंद कर दिया है और जमा ही करते रहे। 'इनसे' (ए.एम. पटेल) कह दिया है कि, जमा कर देना। आसान है न! रास्ता आसान है न? अब यह शास्त्रों में लिखा हुआ नहीं होता है?

बहुत समझने जैसा जगत् है। लोग समझते हैं वैसा यह नहीं है। शास्त्रों में लिखा है, वैसा जगत् नहीं

## दादावाणी

है। शास्त्रों में तो पारिभाषिक भाषा में है, वह सामान्य लोगों को समझ में आ सके, ऐसा नहीं है।

### भुगते उसी की ही भूल

**प्रश्नकर्ता :** फिर तो 'सही है, गलत है', ऐसा अर्थ करना ही नहीं चाहिए, ऐसा हुआ न?

**दादाश्री :** सही-गलत, वह सब बगैर समझ की बातें हैं। इस जगत् में कुछ गलत है ही नहीं। खुद की समझ से खुद न्यायाधीश बन बैठा है।

यह खुद ही न्यायाधीश, खुद ही गुनहगार और खुद ही वकील, तब न्याय किसके पक्ष में होगा? खुद के पक्ष में ही। फिर खुद अपनी पसंद का ही न्याय करेगा न! और खुद निरंतर भूलें ही करता रहता है। यों ही जीव बंधन में आता है। भीतर का न्यायाधीश कहता है कि 'आपकी भूल हुई है।' तो फिर भीतर का ही वकील वकालत करता है कि 'इसमें मेरा क्या दोष?' ऐसा करके खुद ही बंधन में आता है। खुद के आत्म हित के लिए जान लेना चाहिए कि किसके दोष से बंधन है? जो भुगते, उसी का दोष। लोकभाषा में देखें तो अन्याय है लेकिन भगवान की भाषा का न्याय तो यही कहता है कि 'भुगते उसी की भूल'। इस न्याय में तो बाहर के न्यायाधीश का काम ही नहीं है।

### जगत् है न्याय स्वरूप

**प्रश्नकर्ता :** कभी कभार हमें दुःख हो जाता है कि मैं इतना सब करता हूँ, फिर भी यह मेरा अपमान कर रहा है?

**दादाश्री :** आपका अपमान होता है तो वह आपकी ही भूल है। इस दुनिया के दो नियम हैं: पहला कि जो लोगों को दिखता है, वह दोष। तब लोग क्या कहते हैं कि 'अपमान करनेवाला गुनहगार है' और कुदरत क्या कहती है, 'आपका दोष है'। आप आज पकड़े गए इसलिए यह आपका हिसाब चुक रहा है। जब वह पकड़ा जाएगा तब उसका हिसाब चुकेगा। अतः कुदरत निरंतर

न्याय में ही है। किसी तरह का अन्याय नहीं होता। यह बेकार ही नासमझी में कुछ भी कहते रहते हैं और जीवन जीने की कला भी नहीं आती, और देखो चिंता ही चिंता। इसलिए जो हुआ उसे न्याय कहो।

किसी व्यक्ति ने गाली दी, तो वह क्या है? उसने तेरे साथ व्यवहार पूरा किया। सामनेवाला जो कुछ भी करता है, जय-जय (नमस्कार) करता है या गालियाँ देता है, तब वह आपके साथ का सारा व्यवहार ओपन करता है। वहाँ पर व्यवहार को व्यवहार से भाग लगा देना (डिवाइड करना) चाहिए और व्यवहार एक्सेप्ट करना चाहिए। वहाँ तू बीच में न्याय मत लाना, न्याय लाएगा तो उलझ जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, ऐसा समय आया है न कि किसी का भला करें तो वही डंडे मारता है।

**दादाश्री :** उसका भला किया और फिर वही डंडे मारे, तो वही न्याय है। लेकिन मुँह पर मत कहना। मुँह पर कहोगे तो फिर उसके मन में ऐसा होगा कि ये बेशर्म हो गए हैं।

### खुद की दखलंदाजी के यह परिणाम

आपको कोई कुछ कर सके ऐसा है ही नहीं, यदि आप किसी में दखलंदाजी नहीं करो तो। उसकी मैं आपको गारन्टी लिख देता हूँ। यहाँ निरे साँप पड़े हों, फिर भी कोई आपको छुएगा नहीं, ऐसा गारन्टीवाला जगत् है।

ज्ञानी किस तरह सहीसलामत और आनंद में रहते होंगे? क्योंकि ज्ञानी जगत् को जानकर बैठे हुए हैं कि 'कुछ भी होनेवाला नहीं है, कोई नाम देनेवाला नहीं है, मैं ही हूँ सभी में। मैं ही हूँ, मैं ही हूँ, दूसरा कोई है ही नहीं!'

आपकी दखलंदाजी करना बंद हो जाए तो आपमें दखलंदाजी करनेवाला दुनिया में कोई नहीं होगा। आपकी दखलंदाजी के ही परिणाम हैं ये सब! जिस घड़ी आपकी

दखलंदाजी बंद हो जाएगी, तब आपका कोई परिणाम आपके पास नहीं आएगा। आप पूरी दुनिया के, पूरे ब्रह्मांड के स्वामी हो। कोई ऊपरी (बाँस, वरिष्ठ मालिक) ही नहीं है आपका। आप परमात्मा ही हो, कोई आपको पूछनेवाला नहीं है।

### भूल मिट गई कि हो गई मुक्ति

इन सब को भगवान क्या कहते हैं कि, तुझे जैसा आए वैसा कर। तेरे हाथ में सत्ता है! कोई ऊपरी है ही नहीं, कोई डाँटनेवाला है ही नहीं। डाँटनेवाले तो अपनी भूल के कारण हैं, भूल नहीं हो तो कोई डाँटनेवाला है ही नहीं। अपनी भूल मिट जाए तो कोई डाँटनेवाला है ही नहीं, कोई विघ्न डालनेवाला है ही नहीं। तेरी भूल मिटा दे। बाकी, कोई तेरा नाम भी नहीं दे सके ऐसी तेरी शक्ति है!

यह पूरा जगत् 'अपनी' मिल्कियत है। हम 'खुद' ही ब्रह्मांड के मालिक हैं, फिर भी हमें दुःख क्यों भुगतना पड़ा, यह ढूँढ निकाल न? यह तो हम अपनी ही भूल से बंधे हुए हैं। लोगों ने आकर नहीं बाँधा। वह भूल खत्म हो जाए तो फिर मुक्त। और वास्तव में तो मुक्त ही है, लेकिन भूल की वजह से बंधन भुगतते हैं।

क्या भूल? तब कहे 'मैं चंदूभाई हूँ' यह मान्यता ही आपकी भूल है। क्योंकि इस जगत् में कोई दोषित ही नहीं है। इसलिए कोई गुनहगार भी नहीं है, ऐसा सिद्ध होता है।

सामनेवाले का दोष नहीं है, सामनेवाला तो निमित्त है, ऐसा यदि इतना ही भान रहे न, तो तुझे सामनेवाला व्यक्ति निर्दोष दिखेगा! और इससे खुद की तैरकर पार उतर जाएगा, ठेठ मोक्ष तक पहुँचाएगा। हमारा एक ही वाक्य मोक्ष में ले जाएँ ऐसा है। 'ज्ञानीपुरुष' का एक ही वाक्य चाहिए। मोक्ष में जाने के लिए शास्त्र की कोई ज़रूरत नहीं है। क्योंकि 'ज्ञानीपुरुष' सीधा मोक्षमार्ग दिखा देते हैं, पूरा ही। इसलिए वस्तुस्थिति को समझने की ज़रूरत है।

### अपमान को उपेक्षा भाव से भूल जाए वह धर्मध्यान

**प्रश्नकर्ता :** किन्तु दादा, समझने पर भी अभी क्रोध हो जाता है तो?

**दादाश्री :** कोई गालियाँ दे और क्रोध हो जाए, वह रौद्रध्यान है। जब कोई गालियाँ दे, तब इतना ज्ञान हाज़िर हो जाए कि 'यह गालियाँ देनेवाला निमित्त है और यह मेरे ही कर्म के उदय का फल आया है, इसलिए इसमें कोई गुनहगार है ही नहीं,' ऐसा समझ में आए और खुद को क्रोध नहीं आए तब धर्मध्यान होता है। धर्मध्यान किसे कहते हैं? आर्तध्यान और रौद्रध्यान को बदलना, वह धर्मध्यान है।

किसी व्यक्ति ने हमारे लिए खराब किया तो उसकी तरफ किंचित् मात्र भी भाव नहीं बिगड़े और उसके प्रति क्या भाव रहे, ज्ञान का कैसा अवलंबन लें कि 'मेरे ही कर्मों के उदय से ये भाई मुझे मिले हैं,' और तब वह धर्मध्यान में जाता है। यह तो किसी ने भरी सभा में भयंकर अपमान किया हो तो वह आशीर्वाद देकर भूल जाता है। अपमान को उपेक्षा भाव से भूले, उसे भगवान ने धर्मध्यान कहा है। ये तो ऐसे लोग हैं कि अपमान को मरते दम तक नहीं भूलें!

अभी यदि सास दुःख दे रही हो न, तो बहू खुद के दोष नहीं देखती, लेकिन सास की ही गलतियाँ निकालती रहती है। लेकिन वह यदि धर्मध्यान समझे तो क्या करेगी? मेरे कर्मों का दोष है, इसलिए मुझे ऐसी सास मिली। 'मेरी उस सहेली को क्यों अच्छी सास मिली है!' ऐसा विचार नहीं करना चाहिए? किसी सहेली की सास अच्छी होती है या नहीं होती? तो हम नहीं समझ जाएँ कि अपनी कोई भूल होगी न, नहीं तो ऐसी सास कहाँ से आ मिले?

### हो जाती है कर्म की मुक्ति, निर्दोष दृष्टि से

**प्रश्नकर्ता :** दृष्टि में फर्क है, इसलिए ऐसा होता है?

## दादावाणी

**दादाश्री :** ना, दृष्टि में फर्क नहीं है लेकिन उसे भान ही नहीं है कि यह मेरे कर्म के उदय का फल है। वह तो प्रत्यक्ष को ही देखती है, निमित्त को ही काटने दौड़ती है। सास तो निमित्त है, उसे दोषी मत देखना। निमित्त का तो बल्कि हमें उपकार मानना चाहिए कि उसने एक कर्म में से मुक्त करवाया हमें। एक कर्म में से मुक्त होना हो तो किस प्रकार मुक्त हुआ जाएगा? कोई जब काट गया और जब काटनेवाले व्यक्ति को हम निर्दोष देखें, या फिर सास गालियाँ दे रही हो या अपने ऊपर अँगारे डाले हों, उस घड़ी हमें सास निर्दोष दिखे, तब आप समझना कि, इस कर्म से मुक्ति हो गई, नहीं तो कर्म मुक्त नहीं हुआ है। कर्म से मुक्ति नहीं हुई और उससे पहले तो सास के दोष देख लेती है, इससे वापस दूसरे नये कर्म बढ़े! कर्म बढ़ते हैं और फिर उलझ जाते हैं, इंसान उलझ जाए तो फिर उलझन में से कैसे निकलेगा? उलझ जाता है। पूरे दिन उलझन ही उलझन में, उलझन ही उलझन में!

### कर्म के उदय भोगने को, मिलता है निमित्त

कोई व्यक्ति कुछ अपमान करे, उस समय वह अपमान करनेवाला व्यक्ति, यदि आपके कर्मों के उदय हों, तब वह निमित्त मिलता है। आपके कर्म का उदय आपको भुगतना है, उसमें उसका क्या दोष बेचारे का? अतः करके देखना यह प्रयोग इस तरह। अपमान करे, शायद गालियाँ भी दे, फिर भी इतना मानना कि 'अपने कर्म का उदय है।' या फिर हम रास्ते पर जा रहे हों और पहाड़ पर से लुढ़कता-लुढ़कता इतना बड़ा पत्थर आकर गिरे तो हम क्या करते हैं उस घड़ी?'

**प्रश्नकर्ता :** भाग्य में होगा तो लगेगा ही।

**दादाश्री :** पहाड़ पर से पत्थर लुढ़कता-लुढ़कता अपने सिर पर गिरा और हमें लगे, तो हम देख लेते हैं कि कोई नहीं है इसलिए उसमें किसी पर कषाय नहीं करते। और यदि किसी व्यक्ति ने इतना छोटा-सा कंकड़ मारा हो, तो कषाय करते हैं। इसका क्या कारण है? अपनी समझ में फर्क है। वह कंकड़ मारनेवाला भी

पहाड़ है और पत्थर लुढ़का, वह भी पहाड़ है। उसमें शुद्ध चेतन नहीं है, वह मिश्र चेतन है। यह भी पत्थर ही है, पहाड़ ही है बेचारा। इसलिए यदि इतना करोगे तो बहुत हो गया।

### अपमान करनेवाला तो बहुत उपकारी

**प्रश्नकर्ता :** इसके बावजूद भी अपमान अच्छा न लगे तो उसे क्या कहेंगे?

**दादाश्री :** अपमान अच्छा न लगे, वह तो बहुत ही गलत कहा जाएगा। हम सभी को अपमान अच्छा नहीं लगता। वह अच्छा लगे ऐसी शक्ति लोगों में उत्पन्न नहीं हुई है। उन्हें तो अपमान करनेवाला किराए पर रखना चाहिए। लेकिन कोई किराए पर रखता ही नहीं है न! लेकिन किराएवाला वास्तव में अपमान नहीं करेगा न! और लोग तो, जब कोई वास्तव में अपमान करे, तब बैठ जाते हैं। सच में अपमान करे उसे उपकारी मानना। लेकिन तब मनुष्य बैठ जाता है। वास्तव में अपमान करे तब बैठ नहीं जाना चाहिए। यानी कोई अपमान करनेवाले मिल जाए न, तो बहुत उपकारी मानकर 'यह साथ ही रहे तो बहुत अच्छा' ऐसा नक्की करना।

### भाव मत बिगाड़ना निमित्त के प्रति

सामनेवाला व्यक्ति तो कर्म से मुक्ति दिलवाने आया है। जबकि आपको ऐसा लगता है कि यह मेरा बैरी है और यह मेरा प्रेमी है। पूरा जगत् कर्म से मुक्त करवाना चाहता है।

इस जन्म में आपको करना सिर्फ इतना ही है कि सामनेवाले को निमित्त मानकर आपको शांत रहना है। मन ज़रा सा भी बिगड़ने मत देना। यदि मन बिगड़ जाए तो निमित्त से माफी माँगनी चाहिए कि 'हे निमित्त, तू तो निमित्त है, मेरा मन बिगड़ गया इसलिए माफी माँगता हूँ।' इतना ही करना है। यह पुरुषार्थ है।

**समझें, वह 'हम' नहीं हैं**

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, किन्तु जब कोई खराब व्यवहार

## दादावाणी

करे न तब मुझे से सहन नहीं होता, तो तब मुझे क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** 'ज्ञान' यदि हाज़िर रहे तो कुछ भी सहन नहीं करना पड़ता। यानी आपको चंदूभाई से कहना चाहिए, 'देखो न! आपकी फोटो तो देखो।' ऐसा बोलते रहना। ताकि आपको कुछ स्पर्श न करे। चंदूभाई ठंडे दिखेंगे। सामनेवाले के मन में ऐसा होगा कि ये इतनी ठंडक में कैसे रह पाते होंगे।

अब यदि कोई गाली दे रहा हो चंदूभाई को, फिर भी आप तो जुदा हो। आपको वह पहचानता ही नहीं फिर आपको कैसे गाली देगा? वह चंदूभाई को पहचानता है। चंदूभाई तो आपका स्वरूप नहीं है। चंदूभाई आप से जुदा है। चंदूभाई अर्थात् फाइल नं १, तो फिर आप पर कैसे असर करेगा? अब असर नहीं करेगा न? अर्थात् 'तुझे देनी हो उतनी दे', कहना। आप चंदूभाई से कहना 'तू ने कुछ किया होगा, इसीलिए गाली दे रहा है, वर्ना कौन देगा?'

### करो प्रेक्टिस जुदापन रखने की

**प्रश्नकर्ता :** एक व्यक्ति ने मुझे गाली दी। लेकिन ऐसा तो मैं कैसे मान सकता हूँ कि उसने मुझे गाली नहीं दी? मेरा मन कैसे मानेगा?

**दादाश्री :** ऐसा कह ही नहीं सकते न! गाली दी है, वह तो दी ही है न! उसका सवाल नहीं है। लेकिन हम क्या कहते हैं कि अभी तक तो कहते थे कि 'मुझे हुआ,' लेकिन अब ज्ञान के बाद इस चीज़ का साथ मत देना कि 'मुझे हुआ!' अरे, आपको कैसे हो सकता है? आपको तो दादा ने जुदा कर दिया! जुदा नहीं किया?

**प्रश्नकर्ता :** अलग ही हैं।

**दादाश्री :** हाँ, तो फिर अलग ही रखना चाहिए न! पूरा जगत् साइकोलोजिकल (मानसिक) रोग से पीड़ित है 'मुझे हुआ' कहकर। 'मेरा ही समधी मुझे

गालियाँ दे गया' कहता है। इसलिए ऐसा जो बोझ रहता है कि 'मुझे क्यों गालियाँ दीं', वह नहीं होना चाहिए।

चंदूलाल को कोई गालियाँ दें, तब आपको 'चंदूलाल' से कहना चाहिए कि 'चंदूलाल, आपको गालियाँ दे रहे हैं, लेकिन हम आपकी मदद करेंगे।' ऐसी प्रेक्टिस डाल देनी चाहिए। ये पटाखें फोड़ने हों, रोकट फोड़ने हों तो प्रेक्टिस नहीं करनी पड़ेगी? नहीं तो जल मरेंगे न! हर एक चीज़ की प्रेक्टिस करनी पड़ती है।

हज़ारों लोगों के सामने कोई कहे कि 'चंदूभाई में अक्रल नहीं है' तो हमें आशीर्वाद देने का मन होना चाहिए कि 'ओहोहो! हमें मालूम था कि चंदूभाई में अक्रल नहीं है। लेकिन ऐसा तो ये भी जानते हैं।' तब अलगपन रहेगा!

### मौन, वह भी एक उपाय

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाला धमकाए तो उस समय खुद को कैसे रहना चाहिए?

**दादाश्री :** धमकाए तो हँसना। वे धमका रहा हो तो आपको भी कहना चाहिए कि, 'हमम् चंदूभाई, तुमने ऐसे क्या गुनाह किए थे कि लोग ऐसा सुना जाते हैं? आपको शर्म नहीं आती?'

**प्रश्नकर्ता :** ऐसे कहना चाहिए, ठीक है। लेकिन उसका धमकाना वह अपने कर्म का उदय ही माना जाएगा न?

**दादाश्री :** और क्या?

**प्रश्नकर्ता :** यानी यह मूल जागृति रखनी चाहिए। और व्यवहार में कैसा रखना चाहिए?

**दादाश्री :** व्यवहार में सेफसाइड चाहिए तो मौन रखना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** मौन देखकर वह और भी धमकाएगा न?



**दादाश्री :** वह बोल जाएगा तो उसे बोझा लगेगा, हमें क्या?

### अपमान के सामने संयम

**प्रश्नकर्ता :** जब अपमान होता है न तो तब अच्छा नहीं लगता, तो वहाँ क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन जब अपमान हो, तब हमला नहीं करते हो न?

**प्रश्नकर्ता :** वाणी ऐसी निकल जाती है, वाणी से 'अटेक' हो जाता है।

**दादाश्री :** लेकिन आपका भाव वैसा नहीं है न?

**प्रश्नकर्ता :** बिल्कुल नहीं। ऐसी वाणी निकलने के बाद मुझे खुद को बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। लेकिन ऐसी वाणी निकली वह असंयम तो हो गया न? उससे लाभ नहीं होता न, कुछ भी!

**दादाश्री :** लेकिन 'फर्स्ट' संयम अर्थात् अंदर ऐसा होना चाहिए कि 'नहीं ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा क्यों हो रहा है?' वह पहला संयम। लेकिन यह संयम शुरू हो जाना चाहिए। सच्चा संयम यही कहलाता है। 'लास्ट' संयम फिर धीरे-धीरे आएगा।

यदि एक बार कोई आपको गाली दे, और आप संयम रखो, तो उसे भगवान ने प्योर संयम कहा है। भगवान तो प्योर संयम के भूखे हैं। प्योर संयम रखकर तो देखिए, कितनी ही सीढ़ियाँ चढ़ा देगा। एक ही संयम रखने से दस-बीस पायदान यों ही चढ़ जाए, वह है लिफ्ट मार्ग! आपको खुद को भी पता चल जाएगा कि, 'ओहोहो! मैं तो यहाँ था और अब तो यहाँ तक पहुँच गया!'

**नहीं है कोई कर्ता, व्यवस्थित कर्ता**

कोई गाली दे तो हमें 'वह कर्ता नहीं है, व्यवस्थित कर्ता है,' ऐसा भान रहना चाहिए। सामनेवाले

को 'कर्ता है,' ऐसा मानना ही नहीं चाहिए अब आपको। कर्ताभाव जाए उसी के लिए तो यह ज्ञान है। यदि सामनेवाले को कर्ता मानते हो, सामनेवाला गाली दे रहा है, उसे कर्ता मानते हो, तो पूरी बात समझे ही नहीं हो। सिद्धांत यही है कि परसत्ता काम कर रही है। इसलिए 'मैं कर्ता नहीं हूँ' ऐसा भान हुआ है। दूसरे भी कर्ता नहीं हैं, परसत्ता कर रही है, अर्थात् व्यवस्थित शक्ति कर रही है यह सब।

अपमान होते ही 'व्यवस्थित है' कहकर इस खोज में लग जाना है कि किस तरह यह गोली लगी (अपमान हुआ)? आई कहाँ से? मारनेवाला कौन? क्या हुआ? किसे लगी? हम कौन?' जब तक व्यवस्थित समझ में नहीं आए, तब तक यही मानता है कि 'इसी ने मुझे मारी है। मैंने खुद देखा है न।' अतः यह व्यवस्थित यदि समझ गया होता न तो वीतराग हो जाता।

**देखने और जानने से असर नहीं होता**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, एक बार शुद्धात्मा में बैठाने के बाद में वापस कमजोर क्यों पड़ जाता है?

**दादाश्री :** कोई गालियाँ दे तो वापस उसमें हाथ डाल देता है। उसे ऐसा लगता है कि मुझे गाली दी। वास्तव में उसे गाली नहीं देता। वह तो अपनी जगह पर ही है। भला वापस यहाँ क्यों आ गए? अक्रम विज्ञान क्या कहता है कि कोई दोषित होता ही नहीं है।

'व्यवस्थित' प्रेरणा देता है और प्रेरणा से सब चल रहा है। उसे 'हमें' 'देखते' रहना है और बस इतना ही, देखते रहना है। फिल्म और फिल्म देखनेवाले को, दोनों को थकान नहीं होती। देखनेवाले को थकान नहीं होती, न ही फिल्म को थकान होती है। देखने से कोई असर नहीं होता। देखने और जानने से कोई असर स्पर्श नहीं करता।

**मान के गुरखे को कोई स्कोप नहीं**

ये क्रोध-मान-माया-लोभ की कमजोरियाँ हैं, तो मुसीबतों का सामना कैसे हो? क्रोध यों ही नहीं बैठा

रहता। वह तो जब तक मान नाम का शत्रु बैठा रहे, तभी तक क्रोध बैठा रह सकता है। क्रोध तो मान का रक्षण करने के लिए है। अतः जब तक मान है, तब तक गुरखा रहेगा ही।

**प्रश्नकर्ता :** यानी कि अपमान सहन करना सीख जाना चाहिए, ऐसा?

**दादाश्री :** जब मान चला जाएगा, तब अपमान सहन करने की शक्ति आ जाएगी। वह तो गुरखा है। 'मान ने' गुरखा रखा है कि यदि कोई अपमान करने आए तो उससे कहता है कि, 'तेल निकाल देना।' और दूसरा है लोभ। उसने भी एक गुरखा रखा है, उसने कपट को रखा है। उसी को माया कहा गया है। अगर लोभ चला जाए तो माया भी चली जाएगी। क्रोध मान का गुरखा है। 'मूर्ख हो, बेअक्रल हो' ऐसा किसी ने अगर ऐसा कह दिया तब हमें कहना चाहिए, 'भाई, मैं आज से नहीं, पहले से ऐसा ही हूँ।' ऐसा कहना।

हमें अगर कोई कहे कि 'आपमें अक्रल नहीं है।' तब हम उसके साथ तुरंत एडजस्ट हो जाते हैं और उससे कहते हैं कि, 'वह तो पहले से ही नहीं थी। तू अभी यहाँ कहाँ खोजने आया है? तुझे तो आज पता चला, लेकिन मैं तो यह बचपन से ही जानता हूँ।' ऐसा कहेंगे तो झंझट खत्म हो जाएगी न? फिर वह हमारे पास अक्रल खोजने आएगा ही नहीं। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो 'अपने घर' (मोक्ष) कब पहुँचेंगे?

### धन्य दिन इनाम का

**प्रश्नकर्ता :** कोई थप्पड़ मारे तब क्या करना चाहिए?

**दादाश्री :** वह थप्पड़ मारे, उस दिन इनाम मिला है, ऐसा लिख लेना। नोंध कर लेना, कि ऐसा दिन कभी नहीं आया। अतः धन्य है यह! थप्पड़ मिले ऐसा दिन ही कहाँ होता है? और वह भी अपने हिस्से में कहाँ से आए? अपने हिस्से में आता ही नहीं अतः उस दिन को हमें धन्य दिन कहना है, धन्य दिन!

**प्रश्नकर्ता :** और तब हमें व्यवहार कैसा करना है? समभाव से *निकाल* में हमें क्या करना है? वह जो थप्पड़ मार गया उसे 'देखना है'?

**दादाश्री :** वह कौन है, हम कौन है, कौन मार रहा है, किसे मार रहा है, यह सब 'देखना'। आपको 'देखना' है कि इस चंदूभाई को यह फाइल मार रही है। और फिर वह भी देखता है कि यह फाइल इस फाइल को मार रही है, 'देखनेवाले' को लगती नहीं है।

होली जलती है लेकिन होली देखनेवाला जलता है क्या? वह तो चंदूभाई को होता है तब कंधा थपथपाना कि 'भाई, होता है ऐसा। किया है इसलिए हो रहा है,' कहना।

### अब बाकी रहा फाइलों का *निकाल*

अब आप शुद्धात्मा हो गए। आत्मा सिवा और बचा क्या? तो वे हैं, 'संयोग'। ये संयोग क्या हैं? वे फाइल हैं। फाइल का समभाव से *निकाल* करो।

समभाव से *निकाल* करना यानी क्या? सामनेवाले के लिए अभाव नहीं हो, और ऐसा कुछ भी नहीं हो। नापसंद का प्रोटेक्शन करके चले जाने का भाव नहीं करें, चले जाना भी रास नहीं आए। पलायन हो जाना, वह भी गलत कहलाता है। इसका *निकाल* करना ही चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा। आपने जो वह कहा है कि हमें अपना मोक्ष का काम कर लेना है। फाइलें तो हमें छोड़ेंगी नहीं।

**दादाश्री :** कोई अपना नहीं बनता। यह आत्मा आपका होगा, और कोई नहीं होगा। 'मोक्ष में जाना है', वही अपना भाव है न! क्या पराया काम आएगा?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं आएगा।

**दादाश्री :** फिर भी व्यवहार को छोड़ नहीं सकते न? इसलिए *निकाल* कर देना है, लोगों में गलत नहीं

दिखे, इस प्रकार से। हम भी नापसंद के साथ *निकाल* करते हैं न! नहीं करते?

### निश्चय, समभाव से *निकाल* का

**प्रश्नकर्ता :** टकराव टालने की, 'समभाव से *निकाल*' करने की हमारी वृत्ति हो, फिर भी सामनेवाला व्यक्ति हमें परेशान करे, अपमान करे, तो हमें कैसे *निकाल* करना चाहिए?

**दादाश्री :** वह अपना हिसाब है। हमें ऐसा नक्की करना चाहिए कि इसका 'समभाव से *निकाल*' करना है। हमें अपने निश्चय में ही रहना है और अपने आप अपनी पज़ल सोल्व करते रहना है!

### होम में रहकर करो समभाव से *निकाल*

**प्रश्नकर्ता :** समभाव से *निकाल* किस तरह करना चाहिए, वह ज़रा उदाहरण देकर समझाइए।

**दादाश्री :** अभी अगर तुझे किसी ने गाली दी, अब गाली दी वह व्यवस्थित था और वह पिछला हिसाब होगा। इस तरह 'होम' (स्व) में रहकर सारा *निकाल* नहीं करेंगे, तो मन वापस शुरू हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** किसी ने मुझे गाली दी, तो मुझे 'होम' में रहकर *निकाल* कैसे करना चाहिए?

**दादाश्री :** 'होम' में रहना, अर्थात् शुद्ध ही। 'खुद' 'शुद्धात्मा' में रहे, तो प्रज्ञा अपने आप ही *निकाल* करेगी, प्रज्ञा उस घड़ी काम करती रहेगी। मन में समझ जाए कि 'यह व्यवस्थित है,' इसलिए गालियाँ दी। क्यों चार ही सुनाए, बारह शब्द क्यों नहीं कहे? चार शब्दों की गालियाँ देता है, बारह शब्दों की नहीं होती? होती है, लेकिन चार शब्द कहे इसलिए यह 'व्यवस्थित है।' अर्थात् 'व्यवस्थित' कहना और अपना हिसाब है कहना। ऐसा सब एक साथ कहो तो फिर समाधान हो जाएगा।

(यह ज्ञान मिलने के बाद) आप शुद्धात्मा हो गए। अनादि से अज्ञान का परिचय था न, इसलिए वह आदत जाती नहीं है। अभी भी वह अज्ञान खड़ा होता

रहता है। तब फिर हम उससे कहें कि 'अब आप भले ही कितना भी शोर मचाओ, हम सुननेवाले नहीं हैं।'

### खाता कर दो भरपाई

'मैं चंदूभाई हूँ' वही राग है। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह तो छूट गया, मतलब राग गया। अब बैर कैसे छोड़ने हैं, इन लोगों के साथ के? तब कहे, समभाव से *निकाल*। हाँ, वह गालियाँ दे रहा हो न, तो भी बल्कि आपको ऐसा कहना चाहिए कि, 'चंदूभाई, आपकी कोई भूल होगी, तभी बाहर गालियाँ देगा न! हाँ, नहीं तो कोई मूर्ख आदमी भी फालतू नहीं है।'

एक दिन आप अपने गाँव जाकर सबसे कह देना कि 'भाई, मुझे जो गाली दे जाए, उसे सौ रुपये दूँगा।' लेकिन कोई गरीब से गरीब आदमी भी नहीं आएगा। कहेगा 'ना बाबा, उसके बजाय हम मज़दूरी करके पाँच रुपये लाएँगे' लेकिन ऐसा नहीं करेगा कोई। जो करता है, वह आपका पहले का हिसाब है, उतना ही लेन-देन है। यदि आपने पहले दो गालियाँ दी हो तो दो आपको वापस जमा करवा जाता है। तब आप मानते हो कि, 'इसने मुझे दो गालियाँ क्यों दी?' 'अरे भाई, इस बहीखाते का नहीं तो पिछले बहीखाते का हिसाब होगा, हिसाब बराबर कर दो न यहीं से।' बिना हिसाब के तो कुछ है ही नहीं। इसलिए इन सभी फाइलों का *निकाल* करना है, हिसाब बराबर कर देना। यह तो आता है न, हिसाब बराबर करना।

### चोग्गी करो फाइल प्रतिक्रमण से

**प्रश्नकर्ता :** दादा, कभी-कभी ऐसा होता है कि किसी ने हमें गाली दी तब हमें ऐसा लगता है कि हमें वापस उसे नहीं देनी चाहिए, लेकिन चंदूभाई ऐसा कहे कि नहीं, देनी ही चाहिए, और फिर चंदूभाई जाकर दे आते हैं। फिर भी भीतर ऐसा होता है कि यह गलत किया है, और हम ऐसा देखते भी हैं लेकिन चंदूभाई को रोक नहीं पाते।

**दादाश्री :** उसमें हर्ज नहीं है। तेरी ज़िम्मेदारी

नहीं है, चंदूभाई की ज़िम्मेदारी है। अगर वह व्यक्ति चंदूभाई को डाँटें कि, 'कैसे नालायक हो और क्या बोले जा रहे हो?' या फिर धौल भी लगा दे। जो ज़िम्मेदार है उसे मार खानी पड़ेगी।

**प्रश्नकर्ता :** यानी वह 'चार्ज' किया ऐसा कहलाएगा?

**दादाश्री :** नहीं, लेकिन प्रतिक्रमण करना चाहिए। और वह भी 'हमें' प्रतिक्रमण नहीं करना है, चंदूभाई करेंगे। हमें कहना है कि 'अतिक्रमण क्यों किया? अतः प्रतिक्रमण करो।' प्रतिक्रमण किया तो चोखी हो गई सारी फाइलें। ज्ञान से चोखी करके रख दीं।

**अब ज़रूरत है पुरुषार्थ की ही**

पुरुष (आत्मा) होने के बाद पुरुषार्थ की ज़रूरत है। फाइल का तो अपने आप *निकाल* हो ही जाएगा। आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। आपके मन में पहले जो ऐसा रहता था, कि यह आदमी क्या समझता है अपने आपको, ये आपके भाव उल्टे हो रहे थे। वे अब नहीं होने चाहिए। वह चाहे आपको कुछ भी करे, सामनेवाला व्यक्ति उछल-कूद कर रहा हो तो हमें हर्ज नहीं है उसमें, हमें ऐसा नक्की करना है कि 'समभाव से *निकाल* करना है', फिर ऐसा ही होता रहेगा।

ये सब अपने खुद के ही परिणाम हैं। आप आज से किसी के लिए स्पंदन फेंकने का और किंचित्मात्र किसी के लिए (उल्टें) विचार करना बंद कर दो। विचार आए तो प्रतिक्रमण करके धो डालना, ताकि पूरा दिन किसी के भी प्रति स्पंदन बिना का बीते! इस प्रकार से दिन बीते तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

जगत् किसी को मोक्ष में जाने दे ऐसा नहीं है। सब तरफ से अँकुड़ो ऐसे खींच ही लाते हैं। उसका अगर हम प्रतिक्रमण करें, तो अँकुड़े छूट जाएँगे। इसीलिए महावीर भगवान ने आलोचना-प्रतिक्रमण व प्रत्याख्यान ये तीनों चीज़ें एक ही शब्द (प्रतिक्रमण) में दी हैं।

और कोई रास्ता ही नहीं है। अब खुद प्रतिक्रमण कब कर सकेगा? खुद को जागृति हो तब। ज्ञानीपुरुष से ज्ञान प्राप्त होने पर वह जागृति उत्पन्न होती है। हमें प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए, कि 'यह मेरे कर्म का उदय था और आपको ऐसा कर्म बाँधना पड़ा। उसका मैं प्रतिक्रमण करता हूँ और फिर से ऐसा नहीं करूँगा कि जिससे किसी को मेरे निमित्त से कर्म बाँधना पड़े।' तो फिर हम जिम्मेदारी में से छूट गए।

**उल्टा हो जाए सीधा, ज्ञान के द्वारा**

'ज्ञान' नहीं लिया हो तो प्रकृति का पूरे दिन उल्टा ही चलता रहता है, और अब तो सीधा ही चलता रहता है। प्रकृति कहे कि, 'तू सामनेवाले को उल्टा सुना दे', लेकिन अंदर कहेगा कि, 'नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए। उल्टा सुनाने का विचार आया, उसका प्रतिक्रमण करो।' और ज्ञान से पहले तो उल्टा सुना भी देता था और ऊपर से कहता था कि और ज़्यादा सुनाने जैसा है।

इसलिए अभी जो अंदर चलता रहता है, वह समकित बल है, ज़बरदस्त समकित बल है। वह रात-दिन निरंतर काम करता ही रहता है!

**प्रश्नकर्ता :** वह सब काम प्रज्ञा करती है?

**दादाश्री :** हाँ, वह काम प्रज्ञा कर रही है। प्रज्ञा खींचकर भी मोक्ष में ले जाएगी।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, प्रकृति का फोर्स कई बार बहुत आता है।

**दादाश्री :** वह तो जितनी भारी प्रकृति होगी, उतना फोर्स अधिक होगा।

**प्रश्नकर्ता :** परंतु उस समय 'ज्ञान' भी उतना ही जोरदार चलता है।

**दादाश्री :** हाँ, 'ज्ञान' भी जोरदार चलता है। यह 'अक्रम विज्ञान' है, इसलिए मारपीट करके, लड़कर भी ठिकाने ला देगा!

### ज़रूरत है पुरुषार्थ और पराक्रम की

पूरा जगत् प्रतिपक्षी भाव से कर्म बाँधता है। स्वरूप ज्ञानी को प्रतिपक्षी भाव नहीं होते। असर होता है लेकिन कर्म नहीं बंधते और जब पराक्रम उत्पन्न हो, तब तो असर भी नहीं होता। असर में क्या होता है कि कोई गाली दे तो 'यह मुझे ऐसा बोला ही क्यों?' ऐसा प्रतिपक्षी भाव हो जाता है। लेकिन पराक्रम क्या कहता है कि 'तेरी भूल होगी, इसलिए ही वह कहता है न, नुकसान हुआ वह इसलिए कि व्यापार करना नहीं आता है।' इस तरह स्वयं खुद के साथ ही बातचीत करें, तो खुद से पहचान होगी, 'खुद' की गद्दी पर, शुद्धात्मा की गद्दी पर बैठने का परिचय होगा। यह तो गद्दी पर से तुरंत ही उठ जाता है! वह तो अनादिकाल का परिचय है, इसलिए और भोगवटा (सुख या दुःख का असर) अभी बाकी है, इसलिए!

मन बिगड़ जाना किसे कहा जाएगा? सिर्फ मन नहीं बिगड़ता, पूरा अंतःकरण बिगड़ जाता है। पूरी पार्लियामेन्ट का प्रस्ताव पास हो, तब प्रतिपक्षी भाव उत्पन्न होता है। 'सामनेवाले को ऐसा कर डालूँ, वैसा कर डालूँ' ऐसा होता है। यह सिर्फ मन के कारण ही नहीं है। मन तो ज्ञेय है, वीतरागी स्वभाव का है। मन बिगड़ जाए, तो प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। अंतःकरण की पार्लियामेन्ट का प्रस्ताव हो जाना और मन का बिगड़ जाना, ये दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं।

ऑफिस में परमिट लेने गए, लेकिन साहब ने नहीं दी, तो मन में होता है कि 'साहब नालायक है, ऐसा है, वैसा है।' अब उसका फल क्या आएगा, वह जानता नहीं है। इसलिए यह भाव बदल डालना चाहिए, प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। उसे हम जागृति कहते हैं।

हमें किन्हीं भी संयोग में, प्रतिपक्षी भाव उत्पन्न नहीं होते। कभी न कभी उस स्टेज में आए बगैर चारा ही नहीं है।

### अपमान पिघला दें अहंकार को

**प्रश्नकर्ता :** सामनेवाला व्यक्ति अपना अपमान करे और हमें अपमान लगे, तो उसका कारण अपना अहंकार है क्या?

**दादाश्री :** वास्तव में तो, सामनेवाला जो अपमान करता है, वह अपने अहंकार को विलय कर देता है और वह भी 'ड्रामेटिक' अहंकार का। जितना एक्सेस अहंकार हो, वह विलय हो जाता है, उसमें क्या बिगड़ जानेवाला है? ये कर्म छूटने नहीं देते। हमें तो अगर छोटा बच्चा भी सामने हो, तो भी कहना चाहिए कि, 'अब छुटकारा कर दे।'

### निकाल दो अहंकार की रुचि

मूल वस्तु प्राप्त करने के बाद फिर अब अहंकार की रुचि (रस) हटा देनी है। कोई राह चलते कहे, 'अरे, आप बेअक्रल हो, सीधे चलो।' उस घड़ी जो अहंकार खड़ा होता है, वह अहंकार आसानी से टूट जाता है, निकल जाता है और गुस्सा आता है। लेकिन उसमें अब गुस्सा क्या करना? हमें अब नाराज होने जैसा रहा ही नहीं। अहंकार की जो रुचि है, उसे निकाल देना है।

अपमान किसी को भी पसंद नहीं है लेकिन हम कहते हैं कि वह तो बहुत हेल्पिंग है। मान-अपमान, वह तो अहंकार का कड़वा-मीठा रस है। जो अपमान करता है, वह तो आपका कड़वा रस निकालने आया है। 'आप बेअक्रल हैं', ऐसा कहा मतलब सामनेवाले ने वह रस खींच लिया। जितना रस खींच लिया उतना अहंकार टूट गया और वह भी बिना मेहनत के, दूसरे ने निकाल दिया। अहंकार तो रसवाला है। जब अनजाने में कोई निकालता है तब आग लगती है। इसलिए जान-बुझकर सहज रूप से अहंकार को कटने देना। सामनेवाला आसानी से रस खींच देता हो तो उससे बढ़कर और क्या हो सकता है? सामनेवाले ने कितनी बड़ी हेल्प की, ऐसा कहा जाएगा!

जैसे-तैसे करके सारा रस विलय कर दें, तो हल आ जाएगा। अहंकार तो काम का है। वर्ना संसार व्यवहार कैसे चल पाएगा? अहंकार को सिर्फ नीरस बना देना है। हमें जो धोना था, वह दूसरों ने धो दिया, वही हमारा मुनाफ़ा। हम ज्ञानीपुरुष अबुध होते हैं और ज्ञानी के पास इतनी शक्ति होती है कि वे खुद ही अहंकार का रस निकाल दें। जबकि आपके पास ऐसी शक्ति नहीं है। इसलिए आपको तो, कोई अगर अपमान करके सामने से अहंकार का रस निकालने आए, तो खुश होना चाहिए। आपकी कितनी मेहनत बच जाती है! और आपका काम हो जाता है। अपने को तो यही देखना है कि फायदा कहाँ हुआ। यह तो गज़ब का मुनाफ़ा हुआ कहा जाएगा।

### दादा हूँढते अपमान को

ज्ञान होने से पहले तो मैं खुद अपने को गालियाँ देता था, क्योंकि मुझे कोई गालियाँ नहीं देता था न! तब (गाली) मोल कहाँ से लाएँ हम? और मोल कौन दे? हम कहें कि तू मुझे गाली दे, तो भी कहेगा कि नहीं, आपको गाली नहीं दे सकता। यानी, पैसे दें फिर भी कोई गाली नहीं देता। इसलिए फिर मुझे खुद को गालियाँ देनी पड़ती थीं, 'आपमें अक्ल नहीं है, आप मूर्ख हो, गधे हो, ऐसे हो, किस तरह के मनुष्य हो? मोक्षधर्म कोई कठिन है कि आपने इतना सब उधम मचाया है?' खुद ऐसी गालियाँ देता था। कोई गालियाँ देनेवाला नहीं हो, तब फिर क्या करें? आपको तो घर बैठे कोई गालियाँ देनेवाला मिलता है, फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता है, तब क्या उसका लाभ नहीं उठाना चाहिए?

### देखो, जैसा है वैसा

**प्रश्नकर्ता :** अंदर के जड़ भाव ऐसे हैं न कि सामनेवाला दोषित है, ऐसा दिखाते हैं।

**दादाश्री :** यदि हम दोषित कहें तो... अपनी इच्छा में ऐसा लगे कि 'वह दोषित है,' तभी वे जड़ भाव हावी हो जाते हैं। वर्ना हम यदि कहें न कि 'नहीं, वे तो बहुत अच्छे इंसान हैं,' तो फिर वे बंद हो जाएँगे।

हमें भी कभी-कभी ऐसा एडजस्टमेंट लेना पड़ता है न! तो हमें ऐसा होता नहीं है, लेकिन शायद कभी ऐसा तो हमें भी हो जाता है। लेकिन हम तो इससे परिचित हैं इसलिए पहचान जाते हैं कि 'ओहोहो! जड़ भाव, आप वापस कहाँ से आ गए? सभी के जड़ भाव निकाल देता हूँ और आप यहाँ मेरे घर यहाँ आए हो?'

### निर्दोष दृष्टि की संभाल

दोषित तो कोई भी दिखना ही नहीं चाहिए। मन में भी ऐसा नहीं होना चाहिए। बुद्धि में तो होना ही नहीं चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** बुद्धि में कैसे होता है?

**दादाश्री :** बुद्धि क्लियर रहती है। यदि मुझे कोई बहुत गालियाँ दे गया हो, तो उसके लिए मैं ऐसा कहता हूँ कि 'वह बहुत अच्छा इंसान है, इस जैसा इंसान मिलेगा नहीं!'

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, यदि हम ऐसा कहें कि 'वह बहुत अच्छा इंसान है' लेकिन साथ-साथ फिर अंदर से दिखलाता है कि 'कहाँ अच्छा है? ऐसा तो कर गया, उसे कैसे अच्छा कहें?'

**दादाश्री :** ऐसा हो तो भी हम फिर से उसे समझाकर हमारा एडजस्ट करवा लेते हैं। उसे समझ देते हैं बहुत अच्छी तरह से।

**प्रश्नकर्ता :** वह कौन सी समझ देते हैं उसे?

**दादाश्री :** अंतिम तरीका ऐसा समझाते हैं कि 'वास्तव में आत्मा से, निश्चय से तो शुद्ध है और व्यवहार में तो वह बेचारा परवशता से कर रहा है, उसमें उस बेचारे का क्या दोष?' ऐसा-वैसा सब कहकर समझा देते हैं लेकिन अंत में उससे कबूल करवा लेते हैं। एक ही शब्द से नहीं निपटता। कई तरह के शब्दों से समझाना पड़ता है।

**प्रश्नकर्ता :** आपने एक बार ऐसा कहा था कि 'वह शुद्धात्मा है' सिर्फ इतना ही बोलने से वह निर्दोष

नहीं दिखाई देगा। थोड़ी देर बाद मन चढ़ बैठेगा। अर्थात् वे सारे पासे दिखाएँ तभी ऐसा एक्सेप्ट (स्वीकार) करेगा कि वह निर्दोष है।

**दादाश्री :** हाँ, मन केवल उतने से एक्सेप्ट करेगा ही नहीं न! मन तो ज्ञान की बात भी एक्सेप्ट नहीं करता। यह ज्ञान की ही बात है कि 'अरे भाई, वह परवशता से करता है, उसमें उसका क्या दोष है बेचारे का?' हम ऐसा कहें तो वह कहता है 'ऐसा नहीं चलेगा।'

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर, वहाँ पर उसे और क्या समझाना चाहिए?

**दादाश्री :** नहीं समझा पाएगा। जब आपकी ये खिड़कियाँ खुलेंगी न, तब आपको खुद को पता चलेंगी ये सारी हकीकतें। खुलकर बात करो न! आपसे ये जो सारी बातें कर रहा हूँ, उनमें गहरे जाओगे तब आपको खुद को समझ में आएगा, रास्ते मिलेंगे सभी। इसीलिए ये कॉज़ेज़ दिखा रहा हूँ। इन कॉज़ेज़ में पड़े रहोगे तो, कार्य उत्पन्न हो जाएगा।

### चुकता करके हो जाएँ मुक्त

इस दुषमकाल में जो सब लोग मिलते हैं न, उनमें से अधिकतर दुःख देने के लिए ही होते हैं, थोड़े-बहुत हमें सुख देने के लिए भी होते हैं। पाप के उदय के फल स्वरूप दुःख देनेवाला मिलता है, लेकिन वह अच्छा है। क्योंकि मुक्त होने का रास्ता जल्दी मिल गया न!

कोई रिश्तेदार का हिसाब हो और जब वह चुकाए तो क्या हम उसे मना कर सकते हैं?। यदि आप कहो कि 'दादा, अभी हिसाब बंद कर दीजिए।' तो दादा बंद कर देंगे, लेकिन खाते में बाकी रहा न? तो वसूलीवाले को घर पर चाय-पानी पिलाकर 'अलीसा'ब, अलीसा'ब' करके फिर वापस निकाल दें, फिर भी वह वापस तो आएगा न? इसके बजाय एक बार दे ही दे न अभी से! वर्ना फिर भी वह आए बगैर तो रहेगा नहीं। वह लिए बगैर छोड़ेगा क्या? इसलिए प्रतिकूलता में कहना कि 'ले जाओ, ले जाओ।' अपना दादाई बैंक है न!

कोई रोंग व्यवहार नहीं आए तो अपनी शक्ति भी नहीं खिलती। इसलिए यह उपकार मानना कि 'भाई, तेरा उपकार। तूने मेरी कुछ शक्ति डेवेलप कर दी।'

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है, हाँ।

**दादाश्री :** समझें तो हल आएगा, वर्ना हल आए ऐसा नहीं है। धर्म पुस्तकों में नहीं होता, धर्म तो व्यवहार में ही होता है। सिर्फ आपको इस तरह रहना है कि 'मुझे व्यवहार में आदर्श रहना है।' ऐसी भावना रखनी है। व्यवहार बिगड़ना नहीं चाहिए। और यदि बिगड़ गया तो उसका समभाव से *निकाल* कर देना चाहिए।

### पुद्गल की कुशती, देखो समभाव से

**प्रश्नकर्ता :** जब सामनेवाला गाली दे तब वहाँ समभाव नहीं आता, उतनी ही परेशानी होती है।

**दादाश्री :** वह परेशानी अब नहीं आएगी। अब बोलना मत फिर से ऐसा। पहले चंदूभाई था न, तब परेशानी होती थी न? और अब तू शुद्धात्मा हुआ, पूरा ही परिवर्तन हो गया तुझ में इसलिए अब अड़चन नहीं आएगी। वह भी व्यवहार से, बाय रिलेटिव व्यू पॉइंट से वह नाम से हैं और रियल व्यू पॉइंट से शुद्धात्मा है। यदि वह (वास्तव में) शुद्धात्मा है, तो जो गाली दे रहा है वह तो रिलेटिव दे रहा है। और फिर वह आपको गाली नहीं दे रहा, इस रिलेटिव को दे रहा है। मतलब पुद्गल की कुशती कर्म के अधीन होती है, उसे देखते रहो। दो पुद्गल कुशती करें, उसे आप देखते रहो कि कौन जीता और कौन हारा और किसने तमाचा मारा ये सब देखते रहो। नहीं देख सकते? कभी बाहर कुशतियाँ देखने नहीं गया? तो अब यह देखना। अतः यह पुद्गल की कुशती, उसके पुद्गल के साथ तेरा पुद्गल लड़े, वह कर्म के उदय के अधीन है, क्या उसमें किसी का गुनाह है? वह शुद्ध ही दिखना चाहिए। ऐसा कुछ दिखता है या नहीं दिखता आपको?

**प्रश्नकर्ता :** अभी तक वही परेशानी है, वहाँ समभाव नहीं रहता।

## दादावाणी

**दादाश्री :** क्यों नहीं रहता? किसे नहीं रहता? वह तो चंदूभाई को नहीं रहता, इसमें आपको क्या लेना-देना? बिना वजह चंदूभाई का इतना पक्ष लेते हो!

**प्रश्नकर्ता :** वह अलग ही नहीं पड़ता न?

**दादाश्री :** हो गया है अलग। वह तुझे वर्तन से सेटिंग करनी पड़ेगी। इस ओर खिसक जाए तो तो हमें फिर धक्का देकर खिसकाकर ठीक करना पड़ेगा। अलग हो गया है तो दो दिन हैंडल नहीं मारना पड़ेगा?

‘मैं चंदूलाल हूँ’ रहे तो विषमता हुए बगैर रहेगी ही नहीं और ‘मैं शुद्धात्मा हूँ’ तो फिर समभाव से निकाल हो गया।

**कैसे लाना है अंदर का सॉल्यूशन?**

**प्रश्नकर्ता :** दादा, (खुद का जब अपमान होता है तब) ये सारे बाहर के एडजस्टमेन्ट हैं न, कि तेरा बहुत उपकार है कि मुझे नुकसान हुआ, बहुत अच्छा हुआ, तेरा भला हो।

**दादाश्री :** हाँ, ये एडजस्टमेन्ट होगा तभी अंदर के एडजस्टमेन्ट हो पाएँगे, वरना अंदर के एडजस्टमेन्ट नहीं हो पाएँगे न! बाहर का एडजस्टमेन्ट लें तो अंदर का सॉल्यूशन हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** बाहर के उन सभी एडजस्टमेन्ट्स का पता होता है लेकिन वे कुछ हद तक ही काम आते हैं, फिर कुंद हो जाते हैं।

**दादाश्री :** यों इस तरह से शुरूआत करते-करते फिर बिल्कुल खत्म हो जाता है। अभी उसमें इन्टरेस्ट है इसलिए यह दुःख सहन नहीं होता। इन्टरेस्ट आता है अंदर।

**प्रश्नकर्ता :** सहन नहीं होता, ऐसा नहीं है, दूसरों को पता चले या न भी चले, लेकिन खुद को भीतर अहंकार दुःखी होता रहता है।

**दादाश्री :** वह जो दुःखी होता है, उसी को

‘देखना’ है न हमें! ज़्यादा दुःखे वह अच्छा है। बहुत फायदा हुआ। तब वहाँ दुःखी होकर खत्म ही करना है न! तो बिल्कुल नफे-नुकसान रहित हो जाना है! नुकसान भी नहीं और नफा भी नहीं, तो बहुत अच्छा है।

**प्रश्नकर्ता :** यह हकीकत है या सिर्फ आश्वासन देने के लिए है? अहंकार को ऐसा कहते हैं न, तो वह कहता है कि यह सारे आश्वासन है।

**दादाश्री :** तो और फिर क्या है? आश्वासन नहीं तो और क्या दें?

**प्रश्नकर्ता :** सोलिड चाहिए उसे तो।

**दादाश्री :** सोलिड ही है न! हमें चंदूभाई से कहना है ‘आपको लेना हो तो लो, नहीं तो हम तो ये रहे! आपका घाटा आपके लिए बढ़ेगा, हमें क्या हर्ज है।’ यानी यही आश्वासन है, नहीं तो और क्या कहेंगे? उसके सामने क्या हम ज़हर पी लें? उसे पीना हो तो पीए।

हमने तो यह पूरी दुनिया देख ली है। मुझे तो बल्कि आनंद होता है यदि ऐसा कुछ आए तो।

**ऐसा भय क्यों रखें?**

ऐसा है जब कोई अपमान कर दे, तब अपमान का प्रेमी नहीं बन सकता न? जितना मान का प्रेमी है, उतना अपमान का प्रेमी नहीं बन सकता, नहीं? जितना फ़ायदे का प्रेमी है, उतना नुकसान का प्रेमी नहीं बन सकता, नहीं?

‘मेरा मानभंग होगा’ जब तक ऐसा भय रहेगा तब तक कुछ भी ज्ञान प्राप्त ही नहीं हुआ, ऐसा कहा जाएगा। यह तो मूल वीतराग ज्ञान ही प्राप्त करना होता है, और कुछ भी नहीं चाहिए न!

‘जब अपमान का भय नहीं रहेगा, तब कोई अपमान नहीं करेगा’ यह नियम ही है। जब तक भय है, तब तक व्यापार है। भय गया कि व्यापार बंद। अपने



बहीखाते में मान और अपमान का खाता रखो। जो कोई भी मान-अपमान दे जाए उसे बहीखाते में जमा करते जाओ, उधार मत करना। चाहे कितना भी बड़ा या छोटा कड़वा डोज़ कोई दे जाए, तो उसे बहीखाते में जमा कर लेना। तय करो कि एक महीने में सौ जितने अपमान जमा कर लेने हैं। जितने ज्यादा आएँ, उतना अधिक मुनाफ़ा। यदि सौ के बजाय सत्तर मिलें, तो तीस का घाटा। फिर दूसरे महीने में एक सौ तीस जमा करना। यदि तीन सौ अपमान जमा हो गए, उसे फिर अपमान का भय नहीं रहेगा। वह फिर पार उतर जाएगा।

### अपमान होना, वह बहुत लाभदायक

**प्रश्नकर्ता :** अंदर हम सब समझते हैं कि यह चोट अहंकार को पहुँच रही है ऐसा ध्यान भी रहता है, लेकिन तब भी वह घायल अहंकार दुःख देता है।

**दादाश्री :** वह (अपना अहंकार) दुःख दे तब समझना कि आज बहुत फायदा हुआ। ऐसा आए तो बहुत उपकारी मानना कि 'ओहोहो, आज तो बहुत बड़े नुकसान की भरपाई हो गई।'।

**प्रश्नकर्ता :** दादा ऐसा सब नहीं रहता।

**दादाश्री :** वह तो रहेगा, अभी नहीं रहे तो बाद में रहेगा। कभी न कभी तो ऐसा रहेगा ही न! अभी आपको आदत नहीं है इसलिए नहीं रहता। कड़वी चाय पीने की आदत नहीं है न, इसलिए फिर वह जब कहेगा कि 'ओहोहो! उसका तो स्वाद अच्छा है, चाय जैसा है,' तो अच्छा लगेगा। यह तो, कड़वी कभी पी नहीं है न, इसलिए शुरूआत में पीना अच्छा नहीं लगता। क्योंकि, कोई अहंकार को ठेस पहुँचाए वह तो अच्छा है। मन को ठेस पहुँचाए, उससे बहुत फायदा नहीं मिलता। अहंकार को ठेस पहुँचाए वह तो बहुत फायदेमंद है। आप यदि किसी के अहंकार को ठेस पहुँचाओ, तो वह बहुत बड़ा नुकसान है। आपको तो, जो घाटा है, उसे खत्म करना है न!

**प्रश्नकर्ता :** जो आप कह रहे हैं, वह सब समझ में आता है, लेकिन फिर भी वह दुःखता रहता है, वह नहीं दुःखे उसके लिए क्या करें?

**दादाश्री :** वह तो उतना दुःख भुगतने का कर्म लिखा हुआ है, *अशाता* (दुःख परिणाम) वेदनीय भुगतनी हो न, तो होता रहेगा। तो उस दुःख भुगतनेवालों को हमें जानना है कि यह भुगत रहा है। हमने उसमें रुचि दिखाई कि कर्म चिपक जाएगा!

**प्रश्नकर्ता :** रुचि दिखाई मतलब क्या?

**दादाश्री :** 'यह मुझे ऐसा क्यों हो रहा है? मुझे ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा क्यों कर रहा है वह?' उसे 'रुचि लेना' कहते हैं।

### पड़ोसी धर्म निभाएँ इस तरह

'अपना' 'पड़ोसी' चेतनभाव सहित है, 'चार्ज' हो चुका है, इसलिए उसके सभी भाव, बुद्धि के सभी भाव, (फिर) अपमान करे तब मन उछलता है, वे सब पड़ोसी के भाव हैं। मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार सभी जब उछलकूद मचाएँ तब 'हमें' चंदूभाई से धीरे-से कहना, 'उछलना मत भाई, अब शांति रखना।' यानी कि आपको पड़ोसी की तरह पड़ोसीधर्म निभाना है। किसी समय बहुत उत्तेजित हो जाए, तो आप दर्पण के सामने देखना। तो इस तरह दर्पण में चंदूभाई दिखेंगे न? फिर चंदूभाई पर ऐसे हाथ फेरना, यहाँ पर आप फेरोगे तब वहाँ पर दर्पण में भी फिरेगा, ऐसा दिखेगा न? फिर आपको चंदूभाई से कहना है कि "शांति रखो। 'हम' बैठे हैं। अब आपको क्या भय है?" इस तरह अभ्यास करो। दर्पण के सामने बैठकर आप अलग और चंदूभाई अलग। दोनों अलग ही हैं।

### प्रकट होती है शक्ति, तप से

आत्मा की अनंत शक्ति है, इसलिए 'मैं अनंत शक्तिवाला हूँ' (कहना), तुझे जो करना है वह करता रह न! हमें हठ करके (निश्चय करके) बैठ जाना है,

## दादावाणी

तप करना। 'अनंत शक्तिवाला हूँ,' (ऐसा कहना) तो फिर धीरे-धीरे (कषाय) कम होते जाएँगे अपने आप। उसका जोर कम हो गया तो फिर उसके बाद उसका बल टूट जाएगा। मेरी हाज़िरी में सब कुछ टूट जाएगा। शक्ति बहुत ज़बरदस्त है न! हमारी हाज़िरी में सब कुछ टूट जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** आपकी हाज़िरी में यह जो निश्चय किया है, वह आपकी हाज़िरी में ही पूरा करना है।

**दादाश्री :** पूरा हो जाएगा, बस! आपको ऐसा लगेगा कि यह तो बहुत शक्ति बढ़ गई।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, दादा। पहले की तुलना में इन्टेन्सिटी (तीव्रता) कम हो गई है। पहले जितनी तीव्रता से विचार आते थे, वैसी तीव्रता अब नहीं रहती।

**दादाश्री :** हाँ, बस। वह तो अपने आप ही खत्म हो जाती है। आप स्ट्रोंग रहो न तो और कुछ बाधारूप नहीं है।

### फाइल का निकाल, तप सहित

'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह दर्शन है। उसका अनुभव हो, वह ज्ञान है। जितनी मात्रा का अनुभव, उतनी मात्रा में वीतरागता, उतना ही चारित्र। यानी कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र और तप, चार पायों सहित होना चाहिए। उस चौथे पाये का निकाल तो करना पड़ेगा न? उसे नकार भी नहीं सकते। अब तप कब करना है? आप खुद शुद्धात्मा, लेकिन चंदूभाई तो हैं ही। खुद अलग हो गए चंदूभाई से, लेकिन चंदूभाई तो थे वही के वही हैं न! यानी चंदूभाई को अकुलाहट हो भी अंदर। यानी अंदर हृदय तपता है, लेकिन वह सहयोग टूट गया न दोनों का! उसे आपको देखते रहना है, वही तप कहलाता है।

**प्रश्नकर्ता :** तप यानी क्या है? अंदर घर्षण होता है?

**दादाश्री :** नहीं, अंदर अजंपा (बेचैनी, अशांति,

घबराहट) होता है और अकुलाहट होती है। बाहर नहीं बोलता लेकिन अंदर अकुलाहट हो जाती है। वह तप सहन करना पड़ेगा। बाहर तो फाइलों का निकाल करता है समभाव से, लेकिन भीतर अकुलाहट हो जाती है, उसे सहन किया और उस सामनेवाले को व्यक्ति को जलाए बगैर शांति से सहन किया, वह तप कहलाता है। उसे अदीठ तप कहा।

### तप, लेकिन जागृतिपूर्वक

**प्रश्नकर्ता :** अदीठ तप करें, तो समभाव से निकाल हो गया, ऐसा कहा जाएगा न?

**दादाश्री :** सब निकाल हो गया। उसमें रिश्त लें, तो वह ज़रा बाकी रह जाएगा वहाँ। जितनी रिश्त लें, उतना बाकी रहेगा और निकाल करें मतलब वह गया। उस घड़ी आत्मा हलका हो जाता है तो आनंद ही रहता है। बहुत तप जाए तो फिर क्या करता है? शोर मचा देता है ऐसे क्लेश किया था? जो फाइल हो वह फाइल आमने-सामने ही पूरी कर देना। दूसरी फाइल का और उसका कनेक्शन नहीं है वना किसी की चिढ़ किसी और पर निकालोगे।

### भावना करते जाओ, जागृति के लिए

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, कभी ऐसा हो जाता है। खुद को प्राप्त तप करने का मौका आए तब याद नहीं रहता, तब तो कषाय खड़ा हो जाता है।

**दादाश्री :** कुछ समय तक ऐसा होने के बाद फिर एडजस्ट हो जाएगा। आपको अगर ऐसा लगे कि ऐसा ही होता रहता है। तो फिर वह सब बिगड़ जाएगा। एक मिनट में कढ़ी उतार दें तो चलेगा? उफान आने देना चाहिए, उबालकर खीर की तरह अट्टारह उफान आएँ, तब कढ़ी बनती है। उसी तरह आपको मेहनत तो करनी पड़ेगी न! जागृति के लिए भावना करनी चाहिए। 'ऐसा क्यों होता है?' कहना। चंदूभाई से कहना चाहिए कि, 'आए हुए प्राप्त तप को भुगतो न! ऐसा क्यों कर रहे हो?'

**अदीठ तप से आता है हल**

**प्रश्नकर्ता :** कोई अपमान करे और सहन कर लें तो उसे भी तप माना जाता है फिर?

**दादाश्री :** वह भी प्राप्त तप है। आपका तप जल्दी क्यों आया, क्योंकि जल्दी हल आनेवाला है। चोखे हो जानेवाले हैं, स्पीडिली! उखाड़ते समय अंदर तप होता है न? चित्त में दुःख होता है? उसे तप कहते हैं। उस तप को देखते रहना है। उसे दुःख नहीं मानना। दुःख मानोगे तो उस घड़ी तप चला जाएगा।

हम शुद्धात्मा के तौर पर अलग हो गए न इसलिए अब चंदूभाई को सहन करना पड़ेगा, लेकिन उसकी वेदकता आत्मा पर आती है फिर। क्योंकि अभी जब तक संपूर्ण अनुभव अभी नहीं हुआ है, तब तक वेदकता रहेगी। वह अनुभव जब संपूर्ण हो जाएगा, तब वह 'जानपना' कहलाएगा। और 'जानपना' का संपूर्ण नहीं हुआ, कच्चा रहा तो चिपटा रहेगा, तो फिर जल जाएगा। लेकिन वहाँ पर अलग रखना, उसे कहते हैं तप। तप वह है कि अंदर गरम गरम हो जाए। गरम नहीं होता? कभी तो आता होगा न? तप तो आता है न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तपता है, वेदन होता है।

**दादाश्री :** अब उस वेदन से परे रहे, वह है तप! तो वह अच्छा 'जानपना' कहलाता है। उस वेदना में से अलग नहीं रह पाए, तो वह वेदकता, वेदन करना? क्रमिक मार्ग में वेदकता ही होती है। वेदन करना ही, जानना नहीं होता। यहाँ हम जानपने में होते हैं लेकिन वह पिछला माल, जरा गाढ़ापन है, इसलिए जरा वेदकता हो जाती है। फिर भी यदि सेटिंग करके बैठें कि नहीं, मैं तो जानता हूँ, फिर तो वैसा रहेगा। और क्या है? ज्ञायकपन का उसका धर्म ही है।

**प्रश्नकर्ता :** चंदूभाई को आखिर तक वेदन करने का रहता है न?

**दादाश्री :** लेकिन आपको देखते रहना है वह। वह रहेगा लेकिन आपको जानकार की तरह रहना है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लेकिन चंदूभाई को तो वेदन करना होगा न?

**दादाश्री :** और कोई चारा ही नहीं है। वह कभी वेदन करता है न? फिर तो आप उन्हें दपर्ण के सामने लेकर कहना कि 'हम' हैं (साथ में)। लेकिन ऐसे केस कुछ रोज़ा के सौ नहीं आते न? दो-तीन केस ही न! चंदूभाई को तो वेदन करने को बहुत कुछ होता है, मतलब अच्छा-मीठा ज़्यादा होता है। कोल्ड सब बहुत होता है, फिर होट तो कभी-कभार ही आता है। कोल्ड हो तब तो, तो पूरी रात नींद भी आती है न! जबकि होट तो कभी मुश्किल से ही आता है, तब निबेड़ा ला देना। निबेड़ा ला दोगे न?

**तप संग होता है आनंद, ज्ञाता-दृष्टा का**

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन तप में भी आनंद रह सकता है या नहीं?

**दादाश्री :** तप में हमेशा, एक ओर दुःख उठाता है और दूसरी तरफ तप के ज्ञाता-दृष्टा का आनंद रहता है। तप में तपता ज़रूर है लेकिन फिर (अंदर) आनंद होता है। चंदूभाई का किसी ने उनके ऑफिस में आकर अपमान कर दिया कि, 'आपको धंधा करना नहीं आता है और आपने हमें परेशान करके रख दिया।' इस तरह जैसे-तैसे कुछ भी शब्द बोला। तो तुरंत ज्ञान के ऊपर आपकी दृष्टि आती है कि अपना यह ज्ञान क्या कहता है? तो वह यह कि, 'इस फाइल का समभाव से निकाल करो।' ऐसा होता है न? लेकिन वह जो बोला, उसे, इस शरीर में जो मन और वे सब हैं न, वे पकड़ लेते हैं तुरंत, अंतःकरण पकड़ लेता है तुरंत। और उसे सामने जवाब देने के लिए, हिंसक जवाब देने के लिए अंदर सब लाल लाल हो जाता है। लेकिन उस घड़ी यह जवाब नहीं दे और नक्की करे कि समभाव

से निकाल करना है। नापसंद चीजें आए और उसका समभाव से निकाल करना, वह सब से बड़ा तप कहलाता है। अर्थात् ऐसा देखे कि 'ओहोहो, अंदर लाल लाल हो गया है' तो उस घड़ी आत्मा क्लियर हो गया। जो तप को देखता है, वह क्लियर आत्मा है। लाल लाल तो फिर ठंडा पड़ जाता है। कोई भी संयोग आए, वह लाल (गरमी) का हो या ठंडक का हो, तो वह वियोगी स्वभाव का ही होता है। वह उफान थोड़ी देर बाद बैठ जाता है। लेकिन एक बार तो बहुत ही तपता है। उसे फिर इस अभ्यास से देखें, तब आनंद हो जाता है, लेकिन तप तो जाता ही नहीं है। वह तप तो रहता ही है।

### तप में तपो, ज्ञान सहित

शास्त्रकारों ने कहा है कि यदि तू तेरा शुद्धात्मा पद नहीं चुकेगा तो तू मुक्त ही है और चुकेगा तो तप चला जाएगा। तप तो करना पड़ेगा। लोग निंदा करें तो भी आपको तप करना पड़ेगा। लोग मजाक उड़ाकर हँसे, तो हमें भी मजाक में हँसना है कि 'ओहोहो! चंदूभाई आप कैसे इंसान हो! देखो ये लोग क्या कह रहे हैं! चंदूभाई देखो, यह आपकी दशा, लोग क्या बातें कर रहे हैं! निंदा कर रहे हैं! कैसे थे आप! ऐसा हम भी जानते हैं कि आप ऐसे थे।' ऐसा बोलना चाहिए।

अक्रम विज्ञान उसे कहते हैं कि वह बंधेगा ही नहीं फिर। यहाँ तप करना है। लेकिन इस तरह से अलग रहकर बोलें तो फिर तप रहा ही कहाँ? आप भी कहने लगे न कि 'चंदूभाई, देखा आपका यह? यह दुनिया तो देखो आपकी! यह आपकी कैसी दशा है!' हमें भी शर्म आती है!' ऐसा मन ही मन में चंदूभाई से बातें करना, लोग सुने नहीं जैसे।

### आत्मा, जैसा चिंतन करे वैसा ही हो जाता है

**प्रश्नकर्ता :** 'यह इनाम आया' ऐसे जो शब्द हैं न, यह एक ही शब्द हाज़िर रहे न, तो बहुत अच्छा समाधान रहे।

**दादाश्री :** आप पास हुए नहीं हो, पास किए

गए हो। पास हुए होते तो इतना करना आ जाता। इतना जो है, वही बहुत है। लेकिन अब भावना करोगे तो ऐसा होगा। अभी भी भावना करते जाओ और प्रतिक्रमण करते जाओ। लेकिन 'नहीं होता है' ऐसा बोला कि बिगड़ जाएगा। 'नहीं होता' बोलना है तो विवेकपूर्वक बोलना कि 'इस चंदूभाई को बहुत कहता हूँ लेकिन उससे होता नहीं है।'

**प्रश्नकर्ता :** वहाँ पर भी ज्ञान में रहकर उपयोगपूर्वक बोलना है क्या?

**दादाश्री :** हाँ, ताकि फिर आपको असर नहीं करे। यह तो 'नहीं होता,' (ऐसा बोले) उसका असर होता है। फिर आत्मा उसी रूप हो जाता है। जैसा चिंतन करे वैसा ही हो जाए!

### ज्ञान से रहना, शुद्ध उपयोग में

अब आप शुद्धात्मा हो गए, इसलिए हम सब शुद्ध उपयोगी कहलाते हैं। शुद्ध उपयोग यानी क्या कि खुद अपने आपको शुद्ध जान और (औरों को) तू शुद्ध देख। खुद अपने आपको 'मैं शुद्ध हूँ' ऐसी प्रतीति, लक्ष्य और अनुभव से देख और दूसरों को उसी रूप से देख, वह कहलाता है शुद्ध उपयोग।

अब यदि कभी कोई व्यक्ति आपको गाली दे फिर ऐसी आप मुझसे शिकायत करो कि कोई आपको गालियाँ दे रहा है, तो मैं समझूँगा कि आप शुद्ध उपयोग में नहीं रहे। उसे शुद्ध ही देखो। वह भी शुद्ध ही है और यह जो दखल है वह पुद्गल की कुशती है। कुशती कौन करता है? यह पुद्गल खुद अपने सिर पर ले लेता है। और फिर कहेगा कि 'इसने मेरा अपमान किया।' इसलिए मैं कहता हूँ कि तेरा शुद्ध उपयोग बेकार गया। शुद्ध उपयोग कब माना जाता है कि जब ऐसा देखा जाए कि सभी शुद्ध ही हैं।

### यह है ज्ञान का प्रताप

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, दोनों चीजें एक साथ

चलती हैं। सामनेवाले के दोष भी दिखाई देते हैं और ज्ञान भी कहता है कि, उसका कोई दोष नहीं है।

**दादाश्री :** दोष तो बाह्य दृष्टि से दिखता है और अंतर दृष्टि से निर्दोष दिखता है। वह जो निर्दोष दिखता है वह अपना सम्यक दर्शन है। अब निर्दोष नहीं दिखाए तो वह व्यक्ति कच्चा पड़ गया, ऐसा कहा जाएगा। उसमें शुद्ध उपयोग नहीं है। किसी अज्ञानी से पूछकर आओ कि अंदर-बाहर जुदापना की जागृति दोनों साथ में चलती हैं क्या? साधु-आचार्यों से पूछें, 'दोनों साथ चलती हैं?' तब कहेंगे, 'नहीं, एक ही चलती है।' क्योंकि (उनको) दोषित ही दिखाती रहती है और आपको निर्दोष दिखाती है वह।

**प्रश्नकर्ता :** तो दादा, अब ऐसे अवसर पर शुद्ध उपयोग कैसे रखना है?

**दादाश्री :** चंदूभाई क्या कर रहे हैं, उसे देखते रहना और जानते रहना वह शुद्ध उपयोग कहलाए। यानी खुद की प्रकृति को ध्यानपूर्वक देखना, वही शुद्ध उपयोग। शुद्ध उपयोग मतलब, निरंतर जागृत। अन्य किसी में पड़े ही नहीं।

जैसे सिनेमा में बैठा हुआ व्यक्ति फिल्म और खुद, दोनों को ब्यौरेवार जानता है या नहीं जानता? इतना विस्तारपूर्वक जाने तब वह शुद्ध उपयोग कहलाएगा। दृष्टा और दृश्य इतने दूर हों, तब वह शुद्ध उपयोग कहलाता है।

### निर्दोष देखना, वही शुद्ध उपयोग

अब उसमें शुद्ध उपयोग की शुरुआत कैसे होती है? यदि कोई आपको धौल मार रहा हो, उस समय आपको ऐसा दिखाई दे कि 'ओहोहो! चंदूभाई जैसे अच्छे इंसान को भी यह धौल मार रहा है!' आपको दिखाई दे रहा हो, फिर भी आप मानते हो कि भुगतनेवाला चंदूभाई हैं, इसलिए भूल तो उनकी खुद की ही है न! यह सब आपको एक्जेक्ट दिखाई दें और मारनेवाला शुद्ध दिखाई दे, वह शुद्ध ही है। आप जैसे शुद्ध हो,

वैसा वह भी शुद्ध ही है। भले ही उसने ज्ञान नहीं लिया हो, लेकिन वह शुद्ध ही है। उसे यदि अशुद्ध मानेंगे, तो आपका उपयोग बिगड़ जाएगा। तब कहे कि, 'वह आत्मा तो शुद्ध ही है लेकिन बाहर का भाग? बाहरी भाग तो उसका खराब ही है न?' तब कहे, 'नहीं, आपके लिए वह खराब नहीं है। उसके अपने लिए खराब है।' तब साहब, उसमें कुछ न्याय बताइए कि हमारे लिए क्यों खराब नहीं है? धौल मारता है, और फिर खुश होकर मारता है।' तब कहे, 'ऐसा उसके खुद के लिए खराब है लेकिन आपके लिए वह खराब नहीं है।' क्योंकि आपको समझ लेना चाहिए कि 'यह कर्म के उदयाधीन मार रहा है। किसका कर्म? जिसे धौल लगती है उसका कर्म। तब फिर उसका क्या दोष?' कहे! कोई तरीका तो होगा न? इस तरह निर्दोष देखे तब वह शुद्ध उपयोग है। हमें गालियाँ दे रहा हो, उस समय निर्दोष दिखे, तब शुद्ध उपयोग कहलाएगा।

### काम निकाल लो, शुद्ध उपयोग द्वारा

दादा ने सिद्धांतपूर्वक एक अवतारी मोक्षमार्ग दिया है, तो फिर उस सिद्धांत को हमें पकड़कर रखना चाहिए न? उपयोग उसी में ही (आत्मा में) रखना चाहिए। अब हमें कोई मान-अपमान देता है, तो ऐसा जानना चाहिए कि यह चंदूभाई को देता है। अब जितना हो सके उतना शुद्ध उपयोग में ही रहना चाहिए, जो हो उसे देखते रहना है।

भगवान महावीर को चौबीसों घंटे जो शुद्ध उपयोग रहता था वह आपको यदि पाँच मिनट, दस मिनट, पंद्रह मिनट के लिए भी रहे तो बहुत अच्छा है। भगवान क्या करते थे? जो ढेला मारे उसे शुद्ध देखते थे, धौल मारे उसे शुद्ध देखते थे, ऊपर कीचड़ उछाले, उसे भी शुद्ध देखते थे, मारनेवालों को शुद्ध देखते थे। यह वीतराग विज्ञान है। चौबीस तीर्थकरों का, शुद्ध उपयोग का ज्ञान है। यहाँ संसार में घूमते-फिरते हुए भी मोक्ष प्रदान करे, ऐसा है!

- जय सच्चिदानंद

**दादावाणी**

**Pujya Deepakbhai's UK-Germany-Spain Satsang Schedule (2014)**

Contact telephone no. for all centers in UK + 44-330-111-DADA (3232), email: info@uk.dadabhagwan.org

Date	Day	From	To	Event	Address
22-Mar	Sat	7-30PM	10PM	Satsang	THE ARCHBISHOP LANFRANC SCHOOL Mitcham Road, Croydon, Surrey, CR9 3AS
23-Mar	Sun	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
23-Mar	Sun	3-30PM	7-30PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
24-Mar	Mon	7-30PM	10PM	Aptaputra Satsang	
25-Mar	Tue	7-30PM	10PM	Satsang	LEUVA PATIDAR SAMAJ Legrams Mill Lane, Off Legrams Lane, Bradford, BD7 2BA
26-Mar	Wed	7-30PM	10PM	Satsang	MEMORY LANE FUNCTION & BANQUET HALL Gilnow Lane, Bolton, BL3 5EL
27-Mar	Thu	7-30PM	10PM	Satsang	Shree Bhartiya Mandal 103 Union Road, Ashton-Under-Lyne, Lancashire, OL6 8JN
28-Mar	Fri	6PM	10PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
29-Mar	Sat	7-30PM	10PM	Satsang	WANZA COMMUNITY HALL Pasture Lane, Leicester, LE1 4EY
30-Mar	Sun	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
30-Mar	Sun	3-30PM	7-30PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
31-Mar	Mon	7-30PM	10PM	Aptaputra Satsang	
1-Apr	Tue	7-30PM	10PM	Satsang	BIRMINGHAM PRAGATI MANDAL 10 Sampson Road, Sparbrook, Birmingham, B11 1JL
2-Apr	Wed	6PM	10PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
4-Apr	Fri	7-30PM	10PM	Satsang	HARROW LEISURE CENTRE Byron Hall, Christchurch Avenue, Harrow, HA3 5BD
5-Apr	Sat	11AM	12PM	Aptaputra Satsang (English)	
5-Apr	Sat	7-30PM	10PM	Satsang	
6-Apr	Sun	10-30AM	12-30PM	Aptaputra Satsang	
6-Apr	Sun	3-30PM	7-30PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
7-Apr	Mon	7PM	10PM	<b>SATSANG FOR MAHATMAS ONLY</b>	
8-Apr	Tue	7-30PM	10PM		COLUMBUS HOUSE Unit 2, 1st Floor, Stonefield Way Ruislip, HA4 0JA
11-Apr	Fri		ALL DAY	<b>AKRAM VIGNAN EVENT 2014</b>	SAUERLAND STERN HOTEL Kneippweg 1, 34508 Willingen, <b>Germany</b>
12-Apr	Sat		ALL DAY		
13-Apr	Sun		HALF DAY		
17-Apr	Thu		ALL DAY	<b>UK SHIBIR 2014</b>	Shibir for Mahatmas Only. Prior registration compulsory.  <u>Contact</u> 0330 111 DADA (3232) info@uk.dadabhagwan.org
18-Apr	Fri		ALL DAY		
19-Apr	Sat		ALL DAY		
20-Apr	Sun		ALL DAY		
21-Apr	Mon		ALL DAY		
25-Apr	Fri	7PM	9PM	Satsang	HOTEL NUEVO BOSTON Avenida Aragón, Metro Osuna, Madrid <b>Spain</b>
26-Apr	Sat	5PM	9PM	<b>GNAN VIDHI</b>	
27-Apr	Sun	7PM	9PM	Satsang	

## दादावाणी

### दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

**२१-२३ जनवरी :** अहमदाबाद के 'दादा दर्शन' में पूज्य श्री दिपकभाई तीन दिन के लिए आप्तसिंचन की ४५ साधक बहनों को दादाई ज्ञान का अधिक मार्गदर्शन मिले उस हेतु से पधारें। पूज्य श्री ने साधिका बहनों के साथ अहमदाबाद के नए सिमा चिह्न समान रिवर फ्रन्ट की मुलाकात ली। जहाँ पर वे स्पीड बॉट में बैठें और शाहीबाग गार्डन में सत्संग भी किया। रिवर फ्रन्ट प्रोजेक्ट के अधिकारियों ने पूज्य श्री को पूरे प्रोजेक्ट की रूपरेखा समझाई। पूज्य श्री समक्ष साधिकाओं ने रसप्रद वैज्ञानिक प्रयोग की प्रस्तुति की और उसे दादा के ज्ञान के साथ संकलित किया था।

**२४-२८ जनवरी :** अहमदाबाद के विजय चार रस्ता विस्तार में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ११०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में २० सब सेन्टोरो के लगभग ५०० सेवार्थियों ने भाग लिया। पूज्य श्री ने दादा के पुस्तकों के गोडाउन की भी मुलाकात ली। जी.एन.सी. के मार्गदर्शन द्वारा एक विशेष कार्यक्रम में २८० जितने बालकों और युवकों ने विविध नृत्य, नाटक, गेम शो द्वारा दादाई ज्ञान किस तरह से उनके जीवन में उपयोगी होता है उसकी सुंदर प्रस्तुति की और पूज्य श्री के साथ प्रसाद भी लिया।

**६ फरवरी :** अमरेली त्रिमंदिर का खात मुहूर्त पूज्य श्री द्वारा लगभग ४००० से भी ज्यादा महात्मा-मुमुक्षुओं की हाजिरी में हुआ। लीलीया रोड पर आया हुआ यह त्रिमंदिर लगभग एक साल में निर्मित हो जाएगा। पूज्य श्री ने ऐसी भावना व्यक्त की कि हर साल छोटे-मोटे गाँव-शहरों में ऐसे निष्पक्षपाती त्रिमंदिर बनते रहे और जगत् के लोगों के अंतराय टूटे और दादाई ज्ञान की प्राप्ति करें और सीमंधर स्वामी के शरण को भी प्राप्त करें। पूज्य श्री ने यह त्रिमंदिर निर्विघ्न पूरा हो और लोग भगवान के दर्शन करने आए, भगवान को पहचानकर आत्मज्ञान की प्राप्ति करे और उनके जीवन में व्यापे हुए दूषण दूर हो इसलिए प्रार्थना-विधि करवाई।

**७-८ फरवरी :** राजकोट के कुवाड़वा विस्तार में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान २५०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में ३५० सेवार्थियों ने भाग लिया। सभी बड़े सेन्टोरो की तरह राजकोट में भी जी.एन.सी. डे में ४०० जितने बालकों-युवकों ने बहुत उत्साहपूर्वक भाग लिया और जी.एन.सी के बच्चों ने नृत्य, नाटक वगैरह प्रस्तुत किया।

**१२-१३ फरवरी :** मोरबी के शनाला विस्तार में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान ६२१ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। सेवार्थियों के लिए आयोजित विशेष सत्संग-दर्शन कार्यक्रम में लगभग १०० सेवार्थियों ने भाग लिया। पूज्य श्री मोरबी के त्रिमंदिर में दर्शन के लिए गए और मंदिर के संकुल में सेवार्थियों के लिए बनाए गए आवास का उद्घाटन किया।

**१५-१६ फरवरी :** भूज शहर में आए हुए ज्युबिली ग्राउन्ड में आयोजित सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम दौरान १००० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। त्रिमंदिर सत्संग हॉल में आयोजित सेवार्थी सत्संग में कच्छ के लगभग २५० सेवार्थियों ने सत्संग-दर्शन का लाभ लिया। स्थानिक लिटल एम.एच.टी के बच्चों ने पूज्य श्री के समक्ष एक खास नृत्य प्रस्तुत किया।

### Form No. 4 (Rule No.8)

#### Information about 'Dadavani' Hindi Magazine

- 1. Place of Publication :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- 2. Periodicity of Publication :** Monthly
- 3. Name of Printer :** Amba Offset, **Nationality :** Indian,  
**Address :** Basement, Parshvanath Chamber, Near New R.B.I. Usmanpura, Ahmedabad-380014
- 4. Name of Publisher :** Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, **Nationality :** Indian,  
**Address :** Simandhar City, Adalaj, Dist - Gandhinagar, Pin - 382421
- 5. Name of Editor :** Dimple Mehta, **Nationality :** Indian, **Address :** same as above.
- 6. Name of Owner :** Mahavideh Foundation (Trust), **Nationality :** Indian,  
**Address :** same as above.

I, Dimple Mehta hereby declare that the above stated information is correct to my knowledge and belief.

sd/-

**Date :** 15-03-2014

Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation  
(Signature of Publisher)

## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

<b>नागपुर</b>	दिनांक : 28 मार्च	समय : शाम 6 से 8-30	संपर्क : 9970059233
स्थल : कच्छी विशा भवन, छापरु नगर, अनाथ विद्यालय के पास, लक्कडगंज, नागपुर.			
<b>भिलाई</b>	दिनांक : 29 मार्च	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9827481336
स्थल : दादा भगवान सत्संग सेन्टर, मरोडा वोटर टेन्क के पास, मैत्री गार्डन चौक.			
<b>रायपुर</b>	दिनांक : 30 मार्च	समय : शाम 5-30 से 8	संपर्क : 9329644433
स्थल : वृंदावन होल, IDBI बैंक के पास, छतीसगढ़ कॉलेज रोड, काली मंदिर के पीछे, कबीर चौक.			
<b>कोलकाता</b>	दिनांक : 31 मार्च	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 9830006376
स्थल : श्री स्थानकवासी जैन संघ उपाश्रय, २-C नेताजी सुभाष रोड, बिल्डींग नं-2, लीलुहा, हावडा.			
<b>कोलकाता</b>	दिनांक : 1 अप्रैल	समय : शाम 5-30 से 7-30	संपर्क : 9830006376
स्थल : टोली गार्डन, 4-मूरे एवन्यू, मलांचा सिनेमा के पास.			
<b>कोलकाता</b>	दिनांक : 2 अप्रैल	समय : शाम 6 से 8	संपर्क : 9830006376
स्थल : इन्द्रप्रस्थ बिल्डींग, 46 सी, चक्रबेरिया रोड (नोर्थ).			
<b>मुजफ्फरपुर</b>	दिनांक : 6 अप्रैल	समय : दोपहर 2 से 5	संपर्क : 9608030142
स्थल : मनाली कॉन्फरन्स हॉल, क्लब रोड, रमना देवी मंदिर के पास.			

### पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

<b>भारत</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>+ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)</li> <li>+ 'साधना' पर हररोज - रात ९-३० से १० (हिन्दी में)</li> <li>+ 'दूरदर्शन - गिरनार' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)</li> <li>+ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)</li> </ul>
<b>USA</b>	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
<b>UK</b>	+ 'विनस' (डीश टीवी चैनल 805-युके) पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में)

### पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

<b>भारत</b>	<ul style="list-style-type: none"> <li>+ 'साधना' पर हर रोज - सुबह ७-४० से ८-१० और शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)</li> <li>+ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर रविवार सुबह ६-३० से ७ (हिन्दी में)</li> <li>+ 'दूरदर्शन -गिरनार' पर हर रोज दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)</li> <li>+ 'दूरदर्शन-गिरनार' पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)</li> <li>+ 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)</li> </ul>
<b>USA</b>	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह १० से १०-३० EST
<b>USA-UK</b>	+ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)
<b>Australia</b>	+ 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)
<b>Singapore</b>	+ 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
<b>New Zealand</b>	+ 'कलर्स' चैनल पर हर रोज सुबह ५-३० से ६ (हिन्दी में)

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : ( दादा मंदिर ) 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बेंगलूर: 9590979099, कोलकाता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063



## दादावाणी

### आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

#### मुंबई

२-३ मई (शुक्र-शनि) - शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा ४ मई (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि  
स्थल : अंधेरी स्पोर्ट्स कोम्प्लेक्स, जे. पी. रोड, अंधेरी (वेस्ट) संपर्क : 9323528901

५ मई (सोम) - शाम ६-३० से ९ - महात्माओं के लिए सत्संग

६ मई (मंगल) - शाम ८ से १०-३० - सत्संग तथा ७ मई (बुध), शाम ७ से १०-३० - ज्ञानविधि

८ मई (गुरु) - शाम ८ से १०-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : KDMC ग्राउन्ड, पेंढरकर कोलेज के पास, घारडा सर्कल, डोम्बीवली (इ.) संपर्क : 9323528901

#### अडालज त्रिमंदिर

१७ मई (शनि) - शाम ४-३० से ७ - सत्संग तथा १८ मई (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - ज्ञानविधि

#### गोधरा

२३ मई (शुक्र) - शाम ६-३० से ९ - महात्माओं के लिए सत्संग

स्थल : गोधरा त्रिमंदिर, भामैया गाँव, एफ.सी.आई. गोडाउन के सामने.

संपर्क : 9825431503

#### दाहोद

२४ मई (शनि) - शाम ७ से ९-३० - सत्संग तथा २५ मई (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि

२६ मई (सोम) - शाम ७ से ९-३० - आप्तपुत्र सत्संग

स्थल : सिटी ग्राउन्ड, सिंधी सोसायटी के सामने, दाहोद.

संपर्क : 9428029280

### अडालज त्रिमंदिर में हिन्दी सत्संग शिविर - वर्ष २०१४

सत्संग शिविर : दि. २९ मई से १ जून २०१४, समय : सुबह ९-३० से १२, शाम ४-३० से ७

ज्ञानविधि : दि. ३१ मई, दोपहर ३-३० से ७

तीर्थ यात्रा : दि. २ जून सुबह से शाम तक

- बच्चों-युवकों के लिए इस शिविर के दौरान अलग से विशेष संस्कार सिंचन शिविर का आयोजन किया गया है।

- यदि आप २ जून को आयोजित यात्रा में शामिल होनेवाले हों, तो आपका वापसी टिकट ३ जून का लें।

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। इस शिविर के लिए १५ मार्च से १५ मई २०१४ तक रजिस्ट्रेशन होगा। निम्नलिखित सत्संग केन्द्रों में से अपने नजदीकी सत्संग केन्द्र पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं और यदि आपके नजदीक में कोई सत्संग केन्द्र नहीं है, तो अडालज मुख्य सत्संग केन्द्र के रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 पर (सुबह ९-३० से शाम ६) अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं। रजिस्ट्रेशन कराने के बाद यदि आप किसी कारणवश नहीं आनेवाले हो, तो अपना रजिस्ट्रेशन केन्सल करवाना न भूलें।

दिल्ली : 9810098564

कोलकता : 9830006376

अमरावती : 9422915064

जलंधर : 9814063043

रायपुर : 9329644433

जलगाँव : 9420942944

कानपुर : 9452525981

भिलाई : 9827481336

मुंबई : 9323528901

जयपुर : 8290333699

इन्दौर : 9893545351

पूणे : 9422660497

पाली : 9461251542

भोपाल : 9425676774

हैद्राबाद : 9989877786

पटना : 9431015601

जबलपुर : 9425160428

बंगलूर : 9590979099

मुजफ्फरपुर : 7209956892

औरंगाबाद : 8308008897

चेन्नई : 9380159957

मार्च २०१४  
वर्ष - ९, अंक - ५  
अखंड क्रमांक - १०१

## दादावाणी

Date Of Publication On 15<sup>th</sup> Of Every Month  
RNI No. GUJHIN/2005/17258  
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014  
Valid up to 31-12-2014  
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012  
Valid up to 30-6-2014  
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1  
on 15th of each month.

### “ जिसका अपमान होता है, 'खुद' वह नहीं है ”

इस 'चंदूभाई' ( फाइल नं.१ ) का कोई अपमान करे तब क्या होगा ? रात को नींद नहीं आती न ? झटके लगेंगे! अपमान करनेवाला सो जाता है, लेकिन यह झटकेवाला नहीं सो पाता! कोई अपमान करे और 'हमें' नींद नहीं आए, ऐसी निर्बलता किस काम की ? कोई अपमान करे तो 'हम' क्यों नहीं सोए ? जबकि अपमान किसी और का ( फाइल नं.१ का ) होता है, 'आपका' होता ही नहीं। यदि 'आपका' अपमान करे तो सहन करना ही नहीं चाहिए, लेकिन वह 'आपका' अपमान नहीं कर रहा है, फिर क्यों ऐसे हाय-हाय कर रहे हो ? यह तो किसी और का अपमान हो रहा है और 'आप' सिर पर ले लेते हो। 'मेरा किया' ऐसा तो नहीं होना चाहिए न ? वह पहचाने तो 'चंदूभाई' को पहचानता है, 'आपको' तो पहचानता ही नहीं है न ! अब जब वह अपमान करनेवाला उपकारी लगेगा, तब आपका मान खत्म हो जाएगा।

- दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.